नंदी की यात्रा

एक यात्रा वृत्तांत

निनाद जोशी

"चरैवेति चरैवेति"

नंदी की यात्रा

एक यात्रा वृत्तांत

निनाद जोशी

Nandi ki yatra: A Travelogue written by a twenty first century teenager

प्रकाशन का विवरण

Title:	**: नंदी की यात्रा: एक यात्रा वृत्तांत**
	: Nandi ki yatra: A Travelogue
Writer:	**: Ninad Joshi**
Editor:	**: Dr. Jyoti Singh**
Language:	**: Hindi**
Edition:	**: 1st**
Formate:	**: Digital (Printing is allowed)**
ISBN	**: 978-81-949430-0-6**
Date of publication:	**: October, 2022**

Attribution-NonCommercial
CC BY-NC

Published and distributed by
Rosehub Edutainment Private Limited
Damodar Pally, Sripally,
Gopal Nagar, Burdwan, WB-713103

Corporate Office:
NCL-IIT(BHU) Incubation Center

Call Us: +91 7742464575
Email Us: rosehub@outlook.com
Visit Us: http://rosehub.in
RosehubTV: http://youtube.com/rosehubTV
Like Us: http://facebook.com/RosehubIndia

प्रकाशक का निवेदन

हर कोमल मन में अनंत संभावनाएं होती हैं, इन को विकसित करना आवश्यक है और दोहन करना कठिन। लेकिन अगर इरादा शुद्ध रहता है और लक्ष्य अबिचल, तो परिणाम भी उपयुक्त होते हैं। एक डिजिटल मीडिया स्टार्टअप होने के बावजूद, रोजहब में हमने हमेशा से ही कई नए युवा रचनाकारों को फिल्म निर्माण, व्लॉगिंग, एनीमेशन प्रोजेक्ट, ट्यूटोरियल मेकिंग, कंटेंट राइटिंग और कई अन्य चीजों की पहली यात्रा में सहायता करके अपना समय और संसाधन निबेश किया हैं।

इसी क्रम में, हम श्रीमान निनाद को एक अप्रत्याशित यात्रा पर ले गए, मुख्य रूप से उन्हें अपने घर के बाहर बड़े परिदृश्य का कुछ अनुभव देने के लिए। उनकी रचनात्मक धार को पहचानने के लिए उन्हें पहले 1–2 दिनों के लिए विभिन्न कार्य दिए गए। बुक किपिंग से लेकर प्रोडक्शन फोटोग्राफी तक, लेकिन जल्द ही यह एक डायरी के रूप में दिनों की कहानी लिखने के कार्य के साथ समाप्त होता है। एक वादा भी किया गया था कि यदि उसने एक दिन भी चूके बिना लिखने का कार्य पूरा किया, तो हम उसके पाण्डुलिपि के आधार पर एक पुस्तक प्रकाशित करेंगे!

नियम बद्धता को हमेशा युवा दिमागों ने चुनौती दी है; निनाद अलग नहीं थे, लेकिन सही प्रेरणा और सभी साधनों (साम, दाम, दंड, भेद) के साथ हम आगे बढ़े, और यहां आप उनकी पहली प्रकाशित पुस्तक पढ़ रहे हैं। हालाँकि निरंतरता को बाहर से प्रभावित किया जा सकता है लेकिन गुणवत्ता केवल आंतरिक रूप से आती है, और निनाद ने अपनी शुरुआती पहल पर ही पर्याप्त चिंगारी दिखाई है। और वो ऐसा क्यों ना करे? उसे अपने माता–पिता का आशीर्वाद प्राप्त है, जो दोनों ही अपने अलग–अलग क्षेत्र में काफ़ी रचनात्मक हैं!

एक आंतरिक टीम के अलावा, पांडुलिपि को पुस्तक के सम्पादिका– डॉ ज्योति सिंह द्वारा पूरी तरह से संपादित और संशोधित किया गया है; उन्होंने इसके लिए एक उत्तम प्रस्तावना भी लिखी है। सुंदर तस्वीरें श्री कुबेर पटेल, श्री नीलेश रैकवार और श्री पुष्पेंद्र पटेल द्वारा ली गई है, और सभी छोटे रेखांकन को Freepik पर rawpixel.com से आभार सहित प्राप्त किया गया है। इस परियोजना की संरचना श्री रामकेश पटेल ने सभी संभावित संसाधनों के उचित उपयोग से की है। इस पुस्तक का पहला संस्करण श्री सागर दास द्वारा रोजहब एडुटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है एक परिसीमित CC BY-NC लाइसेंस के तहत, इसलिए कोई भी इस पुस्तक की डिजिटल कॉपी को मुफ्त में डाउनलोड, पढ़ और संग्रहीत कर सकता है। आभार स्वीकार कर के सभी सामग्रियों का गैर–व्यावसायिक रूप से उपयोग और पुनर्वितरण भी किया जा सकता है!

निनाद ने पहली बार किसी पुस्तक को लिखने का प्रयास किया है और यह उसका पहला संस्करण है। हालांकि हमने इसे गलती से मुक्त और सुंदर बनाने के लिए कड़ी मेहनत की है, लेकिन संभावनाएं हैं कि कुछ पीछे छूट गए होंगे। मैं आपसे और सभी पाठकों से अनुरोध करता हूं कि संवेदनशीलता के साथ इस पुस्तक का आनंद लें, साथ–साथ कोई भी जांच और रचनात्मक सुझाव देने के लिए हमसे बेझिझक संपर्क करें।

अनेकों शुभकामनाओं के साथ,
सागर दास
निर्देशक, रोजहब एडुटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड

प्रस्तावना

ख़्वाजा मीर दर्द नें क्या खूब कहा है की

सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल ज़िदगानी फिर कहाँ
ज़िदगी गर कुछ रही तो ये जवानी फिर कहाँ

यात्राएं हमारे जीवन को खुशहाल और समृद्ध बनाने का सबसे खूबसूरत माध्यम है, हम जितनी यात्रा करते हैं, हमारे विचारों और भावनाओं का संसार उतना ही समृद्ध होता है, यात्राओं के कारण हमारे ज्ञान की भी वृद्धि होती है। एक तरह से कहा जाए तो यात्राएं हमारे व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती हैं।

यह यात्रा वृतांत लगभग सोलह वर्षीय बालक निनाद जोशी का है, जिसे वह डायरीनुमा अंदाज में प्रतिदिन अपनी यात्रा में हुए अनेकों पड़ावों को क्रमशः लिखता जाता है। अपने कुछ बड़े भाई समान मित्रों (सागर दास, रामकेश पटेल, कुबेर पटेल, नीलेश) द्वारा अकस्मात ही प्रस्तावित एक लम्बी यात्रा के लिए तैयार होता है, 26 फरवरी 2022 को राजस्थान के बीकानेर से शुरू हुई यात्रा (एक माह तक लगातार) भारत के विभिन्न प्रांतों से होते हुए 26 मार्च 2022 को पूरी होती है।

चूंकि निनाद जोशी के दोस्तों की यह यात्रा एक परियोजना के उद्देश्य से की जा रही थी, अतः इस यात्रा के विभिन्न पड़ावों में भ्रमण के साथ–साथ परियोजना से संबंधित कार्य का भी विवरण संक्षिप्त रूप से मिलता जाता है।

निनाद की यात्रा बीकानेर राजस्थान के बंगालनगर से प्रारंभ होती है, और मेहरानगढ़ किला, करणी माता मंदिर, माउंट आबू होते हुए गुजरात की रानी की बाव (बावड़ी), मोढेरा का सूर्य मंदिर, जूनागढ़, स्टेचू ऑफ यूनिटी, सोमनाथ मंदिर, गीर सफारी, महाराष्ट्र में एलोरा की गुफाए और महाराष्ट्र के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण जनजीवन को करीब से देखते हुए, नागपुर के रास्ते सिंगरौली और सिंगरौली से अपने मित्रों (रामकेश पटेल, कुबेर पटेल) के गांव छतरपुर मध्य प्रदेश में कुछ दिन का प्रवास करते

हैं, वहां से खजुराहो जाने का अवसर भी मिल जाता है, तत्पश्चात बनारस और अंत में भोपाल में आकर यह यात्रा समाप्त होती है।

यह एक रोड ट्रिप थी जिसमें निजी कार के द्वारा यात्रा की जा रही थी। कार का नाम निनाद के मित्रों ने नंदी रखा है, जो उनके साथ देश के कई कोनों में सुदूर यात्राओं की सहगामी रही है। यात्रा के दौरान सभी अधिकांशतः अपने टेंट को अपना रात का आशियाना बनाते हैं, घने जंगलों से गुजरते हैं और बीहड़ों में भी अपनी रातें गुजार लेते हैं। ऐसा बहुत कम ही हुआ कि उन्होंने अपनी रात का विश्राम किसी अतिथि गृह में किया हो।

निनाद अपनी लेखनी से अत्यंत विनोद प्रिय (मजाकिया) आभासित होते हैं, अपने मित्रों के साथ हंसी ठिठोली करते हैं और सुबह जागने में कभी–कभी सूर्य देव को भी चकमा देने में आगे निकल जाते हैं। फिलहाल इस यात्रा की स्मृतियां और कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां उन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से संरक्षित कर ली हैं।

अपनी उम्र और अनुभव के अनुसार निनाद का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है, समय के साथ यह लिखने की प्रक्रिया अवश्य ही परिपक्व होगी। यह यात्रा उनके व्यक्तित्व के विकास में निःसंदेह एक नया अध्याय जोड़ेगी।

शुभकामनाओं सहित
डा.ज्योति सिंह

Bikaner, 25th February, 22

Varanasi, 22nd March, 22

Amravati, 10th March, 22

Rajkot, 2nd March, 22

Rahuri, 9th March, 22

Himachal Pradesh
Punjab
Uttarakhand
Haryana
Delhi
Uttar
Rajasthan
Bihar
Jharkhand
Gujarat
Madhya Pradesh
Maharashtra

Bikaner
Karni Mata Temple
Mehrangarh Fort
Mount Abu
Rani ki Vav
Modhera Sun Temple
Rajkot
J.A.U.
Gir Safari
Somnath Temple
Statue of Unity
Trimbakeshwar Jyotirling Mandir
Ellora Cave
Agricultural University Rahuri
Amravati
Bhopal
Khajuraho
Varanasi
Singrauli

The map is just suggestive!

नंदी की यात्रा

एक यात्रा वृत्तांत

निनाद जोशी

Nandi ki yatra: A Travelogue written by a twenty first century teenager

अनुक्रमणिका

प्रकाशन का विवरण		6
प्रकाशक का निवेदन		7
प्रस्तावना		8
अनुक्रमणिका		11
नंदी की यात्रा		
26 फ़रवरी, 2022	पिताजी ने आव देखा न ताव हाँ भर दी	12
27 फ़रवरी, 2022	उन्होंने ऐसा क्यूँ किया...?	14
28 फ़रवरी, 2022	आज का भारत फीका पड़ जाएगा	18
1 मार्च, 2022	मैंने उस से कहा "नाम सू?"	22
2 मार्च, 2022	खुशबू सूंघ कर हमारी भूख और भी बढ़ गयी	24
3 मार्च, 2022	जूनागढ़ आएँ है तो गिरनार पर्वत ज़रूर चढ़िए	26
4 मार्च, 2022	मेरे लिए भी थोड़ी अजीब स्थिति थी	28
5 मार्च, 2022	इतनी भव्य आरती नहीं देखी	30
6 मार्च, 2022	और पहली बार मुझे अपने भारतीय होने का गर्व महसूस हुआ	35
7 मार्च, 2022	खेती को देखा समझा और अंगूर खाए	38
8 मार्च, 2022	महाराष्ट्र में हर जगह शिवाजी राजे के झंडे	42
9 मार्च, 2022	मेरे लिए सोने पर सुहागा हो गया	43
10 मार्च, 2022	एलोरा की गुफ़ाये	46
11 मार्च, 2022	साउंडप्रूफ़ हाइवे	50
12 मार्च, 2022	सिंगरौली का सफ़र	54
13 मार्च, 2022	फ़ुट्बॉल व कैमरा	55
14 मार्च, 2022	नंदी, बैल या गाड़ी?	56
15 मार्च, 2022	पेट या कुँआ?	59
16 मार्च, 2022	जुख़ाम या याद?	60
17 मार्च, 2022	खजुराहो दर्शन	63
18 मार्च, 2022	होली, मधुमक्खी का हमला और भांग का नशा	67
19 मार्च, 2022	मशीन से चारा काटना	70
20 मार्च, 2022	यात्रा और आगे	71
21 मार्च, 2022	बनारस का सफ़र	74
22 मार्च 2022	भगवान विश्वनाथ का आशीर्वाद	78
23 मार्च, 2022	एक तोता ज्योतिषी	79
24 मार्च, 2022	मेरी टिकिट हो गई	80
25 मार्च, 2022	गाँव और मैं	83

नंदी की यात्रा

26 फ़रवरी, 2022
पिताजी ने आव देखा न ताव हाँ भर दी

बात शुरू होती है 25 तारीख़ की शाम को जब रामकेश भइया, नीलेश भइया, सागर भइया और कुबेर भइया मेरे घर पर पापा से मिलने आए। जो कि बंगाल की खाड़ी से श्रीनगर व श्रीनगर से होकर दिल्ली और दिल्ली से राजस्थान बीकानेर घूमने आए हुए थे, और इसी बीच पिताजी से मिलने भी आ गए थे। घर पर बातों–बातों में रामकेश भइया नें मेरे सामने प्रस्ताव रखा कि क्या मैं उनके साथ भारत भ्रमण पर चलना चाहूँगा?

यह सवाल अचानक से दाग दिये जाने के कारण मैंने हाँ तो भर दी। (हालाँकि मुझे लग रहा था की, मज़ाक कर रहे हैं) थोड़ी देर बाद पिताजी बाहर से आए तो भइया नें फिर से वही सवाल मेरे बारे में पूछा, पिताजी ने आव देखा न ताव हाँ भर दी।

यह बात जब माताजी को पता चली तो वे परेशान हों गयी और बोलीं अभी तो छोटा ही है! ऐसे कैसे जाने दे सकते हैं? अपना ध्यान खुद कैसे रखेगा? फिर कैसे ही कर के पिताजी नें (जिन्होंने सोच लिया था की अब तो भेजना ही है) माताजी को मना लिया।

प्लान के अनुसार, अगले दिन (26 फ़रवरी, 2022) को 12 बजे मुझे पिकअप कर लिया गया। मुझे जाते हुए देखकर सभी बहुत दुखी हो रहे थे, माताजी तो सबसे ज़्यादा दुःखी हो रही थी। चूँकि हमें काफ़ी दूर तक कार से सफ़र करना है, इसलिए कार चेकप के लिए दी हुई थी। चेक करते–करते मिस्त्री नें शाम के 4 बजा दिए, और फिर आख़िरकार 4 बज कर 43 मिनट पर हमारी यात्रा शुरू हो गयी।

सबसे पहले हमें जूनागढ़ फ़ोर्ट तक जाकर वहाँ से बाइपास लेना था, लेकिन गूगल मैप के रिफ़्रेश नहीं होने के कारण हम शहरी इलाक़े में फँस गए, बाद में वहा से यूटर्न लेकर हमने नैशनल हाइवे पर गाड़ी चढ़ाई और चल दिए।

काबा (चूहे), माँ करणी का मंदिर, देशनोक, राजस्थान

लगभग 40 किलोमिटर गाड़ी चलने के दौरान रामकेश भइया ने मुझे मेहरानगढ़ की कहानी सुनाई जिसमें, राजा राव; चीलों की पहाड़ी पर एक क़िला बनाना चाह रहे थे जिस पर चिड़िया नाथ जी का अधिकार था। राजा राव कई बार चिड़िया नाथ जी से विनती करते हैं कि वे कृपया पहाड़ी पर किला बनाने दें, और जब नाथजी नहीं माने तब राजा जी ने अपनी कुलदेवी माँ करणी के मंदिर में जाकर उनसे प्रार्थना की, कि वे चिड़िया नाथ जी को वहा से हटाएँ। माँ नें राजाजी की पुकार सुन ली और चिड़िया नाथ जी के स्वप्न में आकर उन्हें वहाँ से हटने की आज्ञा देतीं हैं। जाते–जाते नाथ जी नें राजा को यह श्राप दे दिया की जोधपुर में (जहां पर मेहरान गढ़ क़िला है) हमेशा पानी की समस्या रहेगी, जिसका समाधान राजाजी नें वहाँ पर माँ करणी का मंदिर बनाकर कर दिया।

यह छोटी सी कहानी ख़त्म होते–होते देशनोक आ गया जहां पर माँ करणी का मंदिर बना हुआ है, माँ करणी के मंदिर में जाने पर हमें पता चला कि यहाँ पर हज़ारों की संख्या में कावा (चूहों) और कबूतर माँ करणी की शरण में रहते हैं, वे देवी माँ के पुत्र माने जाते हैं, और उनमें सफ़ेद चूहे को सबसे शुभ मानते हैं।

माँ करणी का दर्शन करने के बाद हमनें राष्ट्रीय राजमार्ग 62 की गली पकड़ ली। कार में 100–150 किलोमिटर सफ़र करने के बाद रास्ते में जब रात हो गयी; तब कुबेर और नीलेश भइया (जो प्रोफ़ेशनल फ़ोटोग्राफ़र हैं) सड़क किनारे एक सरकारी स्कूल के पास रुक कर तारों के फ़ोटोशूट करने का प्लान किया। उनके पास 2 तरह के कैमरे हैं, डी750 और जेड6–दो, सारे ही निकन कम्पनी के हैं। फ़ोटो को रचनात्मक बनाने के लिए, फ़ोटो में सिर्फ़ तारे ना दिखाकर उन्हें और भी चीजें दिखानी थी। तो उन्होंने तारों से भरे आसमान के साथ–साथ फ़ोटो के 35 प्रतिशत भाग में एक खेजड़ी का पेड़ और नीचे के 10 प्रतिशत भाग में शहर का थोड़ा सा भाग दिखाया।

रात को 12 बजे जब नंदी थक गया तो हमने सड़क के पास ही खुले एक ढाबे में खाना (आलू की सब्ज़ी, दाल और रोटी) खाने के बाद, पास ही में अपना तम्बू (टेंट) लगाया, और सो गए। इसी के साथ हमारे पहले दिन का सफ़र ख़त्म हो गया।

27 फ़रवरी, 2022
उन्होंने ऐसा क्यूँ किया...?

आज हमें माउंट आबू जाना था, दिन की शुरुआत में 6 बजे हम जोधपुर के किले मेहरानगढ; जो चीलों की पहाड़ी पर बना हुआ है, उधर घूमने जाना था। हम सभी लोग 6:30 तक पहुंच गए थे, लेकिन किला खुलने का वक्त 9 बजे था, इस बात का

मुझे खेद रहेगा की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध इस किले के खुलने का वक्त 9 बजे हैं (जो की काफ़ी लेट है)।

फिर भी हमने बहुत मज़े किए, हम पहाड़ी पर चढ़े जो पूरी चट्टानों से बनी हुई हैं, और सामने ही उमेद भवन बना हुआ है जो सिलेब्रिटीज़ वेड्डिंग्स के लिए बहुत प्रचलित है।

वहीं पर हमें काफ़ी सारे लोग मिले जो की अपने कुत्तों को घुमाने लाए हुए थे, उस वक्त मैंने कुत्तों की 9 प्रजातीयां एक साथ देखीं, उन्होंने यह भी बताया की वें सभी लोग इंस्टाग्राम से जुड़े हुए है, और उन्होंने एक ग्रूप भी बनाया हुआ है जिसका नाम है डॉगओ'7, और वे हर रविवार अपने कुत्तों को पत्थरों की पहाड़ी पर घुमाने लाते है। इन सभी लोगों के विचार मुझे बहुत अच्छे लगे, क्योंकि इससे उनका और उनके कुत्तों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

रास्ते में एक जोधपुरिया गर्मागरम काचोड़ियां बना रहा था, वहाँ हम नाश्ते का आनंद लेने के लिए रुक गए। थोड़ी देर इन्तज़ार करने के बाद काचोड़ियां सामने हाज़िर हुई, कचोड़ियां खाने पर मुझे दो बातों का ज्ञान हुआ, पहली कचोड़ीयां अच्छी बनी थी, दूसरी बीकानेर की कचोडियों के सामने जोधपुर की कचोड़ी कुछ भी नहीं हैं।

वहाँ से हम अरावली पर्वतों की तरफ़ बढ़ गए, रास्ते में हमने लाइम स्टोन के पहाड़ भी देखे जिन्हें आसपास की फ़ैक्ट्री खोद रही थी और फिर भी वे पहाड़ इतने बड़े लग रहे थे की अगर फ़ैक्ट्री उन्हें 2040 तक रोज़ खोदती रहें तब भी वें पहाड़ शायद ही ख़त्म हों।

लगभग 30 किलोमीटर सफ़र करने के बाद अरावली की पहाड़ियों की शृंखला शुरू हो गयी। इसी बीच हम एक 200 मीटर लम्बी सुरंग से होकर गए, उस वक्त मुझे लग रहा था की मैं नंदी में बैठकर किसी विडीओ गेम की सुरंग में जा रहा हूँ! इस बात में कोई दो राय नहीं है कि भारत में अंतरराष्ट्रीय स्तर के राजमार्ग को बनाने में किसी भी तरह की कंजूसी नही की गयी हैं।

पर्वत की इस श्रृंखला को देखते–देखते मुझे बिहार के दशरथ माँझी (अगर आप दशरथ माँझी को नहि जानते तो लगे हाँथ आप गूगल करके देख सकते हैं, उनपर एक फ़िल्म भी बनी है) की याद आ गयी जिन्होंने अपनी पत्नी की मौत का ज़िम्मेदार एक पर्वत को मानकर व अपनी पत्नी की मौत का बदला लेने के लिए अकेले ही उस पर्वत को दो भागों में काट दिया था।

काफ़ी आगे चल कर माउंट आबू का रास्ता शुरू हो गया। आसान शब्दों में बताने के लिए जिन लोगों ने अभी तक माउंट आबू नहीं देखा है, बात दूँ कि, अरावली पर्वत

श्रृंखला के सबसे बड़े पर्वतों के भाग को हम माउंट आबू कहते हैं। पहले के समय में जब राजस्थान में गर्मी बहुत बढ़ जाती थी तो राजस्थान के शाही घराने के लोग यहाँ पर छुट्टियाँ मनाने आते थे, क्योंकि जितना ज्यादा आप ऊँचाई पर जाते हैं उतनी ज्यादा ठंड बढ़ती जाती है।

श्रृंखला को श्रृंखला से जोड़ती हुई रोड हमें माउंट आबू के ऊपरी हिस्सों पर पहुँचा रही थी, हम वहाँ की वनस्पतियों, कन्दराओं और बड़ी–बड़ी चट्टानों को देखते आगे बढ़ रहे थे। अचानक से कुबेर भइया नें ब्रेक लगा दिया, और हम देखते क्या हैं – एक बंदर हमारी गाड़ी के नीचे आते–आते बचा! पर गलती कुबेर भइया या बंदर की नहीं थी, गलती उन राह चलते लोगों की थी जो सड़क पर बंदरों को खाना खिलाते रहते हैं। इससे बंदरों को आसानी से भोजन प्राप्त करने की आदत हो जाती है, और जब बंदर रोज आसानी से भोजन पाने के लिए सड़क पर आ जाते हैं तो वे अपने और राह चलते लोगों के लिए खतरा पैदा करते हैं। साथ ही यह जंगल की खाद्य श्रृंखला को भी तोड़ देता है।

माउंट आबू में काफ़ी ऊपर तक पहुंचने के बाद हमने जैन मंदिर के पास ही बने एक ढाबे के आगे गाड़ी रोक दी, दाल बाटी और चूरमा खाया, और फिर मंदिर की ओर चल दिए। मंदिर के अंदर घुसने पर मैंने देखा कि मंदिर के हर एक कोने में संगमरमर के पत्थरों को जोड़कर नक्काशी की गयी हैं। स्तंभों से लेकर दरवाज़े के कोनों तक हर जगह मूर्तियों के द्वारा कुछ न कुछ दर्शाया गया हैं। कहीं पर जैन कथाएँ बनी हुई हैं, तो कहीं जैन तीर्थंकर की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। मंदिर की नक्काशी की जितनी तारीफ़ की जाए उतनी कम हैं।

जब हम माउंट आबू से निकले तो लगभग 6 बज गए थे, और 5 घंटे का रास्ता तय करके हम रानी की बाव (पाटन, गुजरात) पहुंच गए, और आसपास के लोगों से पता चला की बावड़ी का गेट शाम को 7 बजे बंद कर देतें हैं।

रात को 11 बजे हम पास ही बने एक बड़े से आश्रम के अंदर गए जो बहुत ही भव्य प्रतीत हो रहा था। उन्होंने उधर कुत्ता, बिल्ली, कछुए और काफ़ी सारी प्रजातियों के पक्षी पाल रखे थे, उनका बगीचा भी विभिन्न प्रजाति के फूलों व पेड़ पौधों से भरा हुआ था। हमने मंदिर के पुजारी से एक रात बागीचे में टेंट लगाकर रुकने की इजाज़त माँगी।

मगर आश्रम के प्रभारी जी के मन में न जाने क्या चल रहा था! वे चाहते तो हमें सीधे मना भी कर सकते थे, पर उन्हें हम लोग सही भी लग रहे थे, इसलिए उन्होंने मना करने की बज़ाय कहा "आप उस सामने वाले मंदिर के पुजारी से बात कीजिए वे आपकी मदद करेंगे"। बाद में जब हम दूसरे मंदिर गए तो वहाँ के पुजारी जी नें साफ़

विश्व धरोहर रानी कि बाव, पाटन, गुजरात

मना कर दिया, यह बताकर कि सारी सुविधा उनकी अपने सम्प्रदाय के लोगों के लिए आरक्षित है।

मुझे इस बात का खेद रहा कि एक ही सनातन धर्म का होने के बावजूद उन्होंने ऐसा क्यों किया...? पता नहीं उन्हें हमारी बात को टाल कर क्या मिला! दोनों जगहों से नकारात्मक उत्तर पाने के बाद हमनें थोड़ी दूर स्तिथ एक ढाबे में खाना खाया और उसी के पास बने एक पेट्रोल पम्प पर तम्बू गाड़ कर सो गए।

28 फ़रवरी, 2022
आज का भारत फीका पड़ जाएगा

मेरा आज का दिन चिड़ियों की चहकने पर शुरू हुआ! मैंने टेंट से बाहर निकलकर देखा कि सूर्य अभी उदय होने ही वाला है, आसपास के पेड़ – हवा के झोंके से झूम रहे थे, रोड की दूसरी तरफ़ गडरिये भेड़ चरा रहे थे, यह नज़ारा देख कर मुझे यह श्लोक याद आ गया–

सूखानिलोयमअपि सौमित्रे! कालः प्रचुरः मनममथः।
गंधवानः सुरभि मासो जातः पुष्पः फलद्रुमः।।

है सोमित्रे (यहाँ पर सोमित्र इस लिए लिखा गया है क्योंकि लक्ष्मण जी सुमित्रा जी के पुत्र थे) अपने आस पास देखो हर जीव–जन्तु सुख की प्राप्ति कर रहा है, पुष्पों की गंध पूरे वातावरण को सुगंधित कर रही है, क्योंकि बसंत ऋतु आ गयी है।

मेरे सफ़र का यह दिन बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि आज हमें रानी की बावड़ी देखने जाना था, अगर आपने गौर किया हो तो हमारे 100 के नोट पर रानी की बावड़ी की का चित्र बना रखा हैं, ज्यादातर लोगों ने गौर नहीं किया होगा, तो लगे हाथ 100 का नोट निकालकर देख लीजिए।

यह बावड़ी आज से लगभग 1100 साल पहले बनायी गयी थी। रानी की बाव में हम एक तरफ़ से ही घुस सकते हैं तो इसलिए इसे 'नंदा' कहा जाता है। बावड़ियों चार प्रकार की होतीं हैं, (पहली) 'नंदा' जिसमें एक तरफ़ से नीचे जा सकते हैं, (दूसरी)

'भद्रा' जिसमें हम दो तरफ़ से नीचे जा सकते हैं, (तीसरी) 'जया' जिसमें हम तीन तरफ़ से नीचे जा सकते हैं, (चौथी) 'विजया' जिसमें हम चारों तरफ़ से नीचे जा सकते हैं।

नीचे जाने पर हमनें देखा के सैंड स्टोन पर भगवान विष्णु के दशावतार की मूर्तियाँ बनाई हुई हैं, जिसमें भगवान परशुराम और श्रीकृष्ण की मूर्तियाँ ग़ायब थी। काफ़ी सारी मूर्तियों में स्त्रियों को नृत्य करते, बाल संवारते व दैनिक क्रियाएँ करते हुए दिखाया गया है, पूरी बावड़ी में दो चीजें काफ़ी अधिक मात्रा में चित्रित थी, (पहली) कमल का फूल, (दूसरी) दाड़ी वाला मुनि जो हर देवी के पैरों के पास खड़े थे।

रानी कि बावड़ी की कहानी यह हैं कि यह आज से लगभग 1100 साल पहले बनायी गयी थी, पर बन जाने के 240 साल बाद ही यह मिट्टी में धँस गयी। बाद में 1935 में अंग्रेजों ने इसका पता लगाया, आज़ादी के बाद इसे खोदकर निकाला गया, और वर्तमान में इसे विश्व धरोहर का दर्ज़ा दिया गया हैं।

रानी कि बावड़ी के भव्य दर्शन करने के बाद हमने राजकोट का हाइवे पकड़ लिया और थोड़ी देर नंदी में सफ़र करने के बाद सड़क के पास ही बनें ढाबे का खाना (आलूमटर की सब्ज़ी, रायता, रोटी और प्याज़) खाकर हम फिर से काफ़ी देर नंदी से सफ़र करते रहे। बाद में राजकोट के सूर्यमंदिर के आगे आ गए, वहाँ पर बिजली से चलने वाली गाड़ियों के लिए मुफ़्त सोलर चार्जर बने हुए थे।

राजकोट का सूर्य मंदिर आज से 1100 साल पहले सोलंकी नरेश द्वारा बनाया गया था। इसके आगे एक विजया बावड़ी है (इसमें चारों तरफ़ से घुस सकते हैं), सूर्य मंदिर के आगे की बावड़ी में हमनें लगभग 10 कछुए और हज़ारों छोटी–छोटी मछलियां देखी। वे कछुए कभी–कभी बावड़ी से बाहर आ जाया करते थे, जैसे उन्हें आज़ादी की तलाश हो, लेकिन इंसानों को देखकर वापस भाग जाते थे। एक कछुआ मुझे बावड़ी के पास आते देख डरकर भागा, हालाँकि मैं कुछ नुक़सान पहुँचा भी नहीं रहा था।

बावड़ी की सीढ़ियों से नीचे उतरने के बाद मैंने सैंड स्टोन से बनी काफ़ी सारी भगवान विष्णु की छोटी–छोटी मूर्तियाँ देखी। हर एक मूर्ति भगवान विष्णु के प्रति बहुत प्रेम से बनाई गयी थी, हर एक मूर्ति अपनी ओर ध्यान आकर्षित कर रही थी, जैसे नवविवाहित दुल्हन सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

अंदर जाने पर हमें छत पर एक बहुत ही सुंदर नक्काशीदार कमल का फूल बना हुआ दिखा जो कि स्तर दर स्तर बनाया गया हैं व हर स्तर पर अलग फूल बने हुए हैं। स्तम्भों पर स्त्रियों की नृत्यरत भंगिमाएं बनायी गयी हैं, मेरे ख़याल से यह मंदिर

नृत्यमंडप के रूप में बनाया गया था। वादक, वाद्ययंत्रों के साथ नर्तकियां उन प्रस्तरों पर खूबसूरती से उत्कीर्ण हैं। संभवतः यह नृत्य देवताओं को समर्पित होता रहा होगा, क्योंकि यहाँ पर कोई दर्शकदीर्घा नहीं है, और यह गर्भगृह के ठीक सामने है। इस नृत्यशाला (सूर्यमंदिर) का वास्तुशिल्प इस प्रकार का है कि चाहे बाहर का तापमान 40 डिग्री हो लेकिन अंदर का तापमान बाहर की तुलना में कम ही रहेगा।

सूर्यमंदिर के विशिष्ट पहचान के लिए उसके नीचे 7 घोड़े बने हुए हैं, साथ ही माँ पार्वती और भग़वान शिव की मूर्तियाँ भी सूर्य की मूर्तियों के पास बनी मिलती हैं। यह सूर्य मंदिर गुजरात के पाटन ज़िले में स्तिथ है व इस क्षेत्र में सूर्य भगवान की बहुत कृपा रहती हैं और धूप पूरे साल तेज रहती है।

सूर्य मंदिर आज से कई सौ साल पहले बनाया गया था। यहाँ सूर्य को भगवान विष्णु का भी रूप माना जाता है क्योंकि वे हमारे खाना खाने से लेकर जीवित रहने तक का आधार हैं। तो मेरे ख़्याल से पुराने समय के लोगों ने यह मंदिर भगवान सूर्य की आराधना के लिए बनाया, ताकि सूर्य भग़वान इस जगह पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें।

मंदिर की एक–एक नक्काशी से बनायी हुई मूर्ति सूर्य भगवान के प्रति बहुत प्रेम और खूबसूरती से बनायी गयी हैं, हर एक मूर्ति पर कलाकारों ने बहुत मेहनत से काम किया हैं। मेरे हिसाब से अगर तुलना की जाए तो उस समय के मूर्तिकार व कलाकारों के सामने आज का भारत फीका पड़ जाएगा।

सूर्य भगवान के भव्य दर्शन करने के बाद हमने फिर से नैशनल हाइवे पर नंदी को चढ़ा दिया, हमारा अगला पड़ाव – गुजरात में राजकोट नाम के ज़िले में था।

लगभग 3 घंटे नंदी में सफ़र करने के बाद हमने देखा कि कुछ किसान बहुत ही बारीकी से जीरे को पौधे से अलग कर रहे थे एक मशीन के सहारे। थोड़ी देर उनसे बात करने पर हमें उनके खेती करने का तरीका समझ आया जिसमें, पहले व्यक्ति की ज़मीन थी जिसे पूरे फ़ायदे का 40 प्रतिशत भाग मिल रहा था, दूसरे व्यक्ति की ज़िम्मेदारी पानी व खाद उपलब्ध करवाने की थी उसे भी 40 प्रतिशत भाग मिल रहा था, और तीसरे व्यक्ति की ज़िम्मेदारी थी खेत को खोदने की, फसल का ध्यान रखने की, उन्हें खाद, पानी और पेस्टिसाइड्स डालने की, तो उसे 20 प्रतिशत हिस्सा मिल रहा था! नीलेश भइया ने बताया इसे बटाई कहते हैं।

रात को लगभग 10 बजे खाना खाने के बाद हम आर्ष विद्या मंदिर में पहुंच गए यह आश्रम राजकोट में स्थित है, वहाँ से हरित जी ने हमें अपने घर में रुकने के लिए स्थान दिया व आज का सफ़र हरित जी के यहाँ हमारे सोने के साथ खत्म हो गया।

श्री सोमेश्वर महादेव, आर्ष विद्या मंदिर, आश्रम, राजकोट, गुजरात

1 मार्च, 2022
मैंने उस से कहा "नाम सू?"

हमें आज सुबह–सुबह आश्रम जाकर भगवान शिव की पूजा का भागी बनना था। तो हमने अपना आज का दिन सुबह पाँच बजे शुरू किया, और लगभग साढ़े–पाँच बजे तक मंदिर चले गए। नीलेश और कुबेर भइया भग़वान शिव और उनकी आराधना करने वाले लोगों की फुटेज ले रहे थे। आज शिवरात्रि थी तो हमें आज पूरे दिन रुक कर आश्रम में हो रही गतिविधियों, लोगों की और पूजा करने की विधि के फ़ोटोज़ और विडीओज़ बनाने थे।

आर्ष विद्या मंदिर के बारे में आपको थोड़ा बता देता हूँ, इस आश्रम में मुख्य बाबा जी परम पूज्य स्वामी परमात्मानंद सरस्वती जी व उनके सहकर्मी उत्सुक विद्यार्थियों को वेदांत की शिक्षा देंते हैं, और शिविर का संचालन करते हैं। आशुतोष जी आश्रम में आए उन विद्यार्थियों की देखभाल करते है, जो मध्य प्रदेश शासन द्वारा चुने गये हैं। व कम उम्र के होने के बावजूद वे काफ़ी विद्वान व्यक्ति हैं। पिछले वर्ष रामकेश व सागर भइया भी इस शिविर में गए थे।

पूजा के वक्त पंडित–जी ने भगवान शिव को इतना प्रेम और खूबसूरती से सजाया था कि उन्हें देखकर मुझे वर माँगने की इच्छा हो गयी और मुझे यह श्लोक याद आ गया

हरि ओम्
गुणानान्त्वागणपतिष्ठ हवामहे प्रियमान्त्वार्ष्ट्यपतिष्ठ
हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिष्ठ हवामहेव्वसोमम।
आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासिगर्भधम् ।

(भगवान शिव के भक्तों से मैं माफ़ी चाहता हूँ, मैंने यह श्लोक सही ढंग से लिखने की पूरी कोशिश की है)

इस श्लोक का अर्थ हैं – जो मन जागते हुए मनुष्य से बहुत दूर तक चला जाता है, वही द्युतिमान मन सुषुप्त अवस्था में सोते हुए मनुष्य के समीप आकर लीन हो जाता है। तथा जो दूर तक जाने वाला और जो प्रकाशमान स्रोत आदि इन्द्रियों को ज्योति देने वाला है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो।

पूजा के लिए हमें अलग से एक किताब दी गयी, जिसमें रुद्राअष्टाध्याई के कई सारे श्लोक जोड़े गए थे। पूजन के बाद लगभग 9 बजे सभी भक्तों को नाश्ता दिया गया जिसमें सोंख की खिचड़ी व साथ में छाछ दी गयी! हम गुजरात में जब भी किसी ढाबे, घर या आश्रम में रुक रहे थे तो हमें खाने के साथ छाछ ज़रूर दी जा रही थी, मुझे गुजरात में कुछ और अच्छा लगा हो–ना–हो, पर यह परम्परा बहुत अच्छी लगी।

नाश्ते के टेबल–कुर्सी ग्रैनाइट पत्थर के बने हुए थे, और आसपास बहुत सारी वनस्पतियाँ थी (चीकू के पेड़, अनार के पेड़, गुलाब के पौधे, गेंदे की पौधे, पुदीना आदि)। मैंने चीकू का पेड़ पहली बार देखा था, हालाँकि चीकू अभी तक पके नहीं थे, हाथ लगाने पर कड़े प्रतीत होते थे, फिर भी मैंने एक चीकू तोड़ा तो उस में से एक सफ़ेद पदार्थ बाहर निकल कर आ गया (मेरे ख़्याल से वही सफ़ेद पदार्थ चीकू को मीठा बनाता होगा) और मेरे हाथों पर लग गया, वह काफ़ी चिपचिपा था और ऐसे चिपक गया जैसे मेरे ही शरीर का भाग हों काफ़ी देर की मशक्क़त के बाद जाकर उतरा।

आश्रम में गीर प्रजाति की बहुत खूबसूरत गायें थी, दोपहर में मुझे एक छोटा सा बच्चा आश्रम की गायों के साथ खेलता हुआ दिखा। वह जिस तरह गायों को रेलिंग के पास चढ़ कर सहला रहा था मुझे लगा जैसे भगवान श्रीकृष्ण के छोटे रूप को देख रहा हूँ। थोड़ी देर बाद वह बच्चा गायों को सहलाते–सहलाते मेरे पास तक आ गया, पास आने पर मैंने उस से कहा "नाम सू?" उसने कहा "पराशर"। गुजरात में आने पर मुझे यह वाक्य बहुत अच्छा लगा, सही कहूँ तो एक हथियार जैसा। किसी भी बच्चे के सामने जा कर यह दो शब्द बोल दें तो – बच्चा खुशी से अपना नाम बात देता हैं। पराशर ने बताया कावेरी नामक गाय जब छोटी थी तब उसकी जंघा पर अपना सर रख देती थी।

आश्रम में खाना खाने के बाद आशुतोष जी को मैंने बताया कि मैं अपनी यात्रा के वृतांत एक जगह संकलित कर के लिख रहा हूँ, तो उन्होंने मुझे काफ़ी सारे लेखकों के नाम बताए जिन्हें पढ़कर मैं अपने लेखन को और अच्छा कर सकूँ।

दोपहर को लगभग ढाई बजे से ही छोटी–छोटी बच्चियाँ कत्थक की तैयारी कर रही थी क्योंकि आज शाम को स्टेज पर उन्हें अपनी कला का प्रदर्शन करना था। शिवरात्रि के अवसर पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया था। शाम को सबसे पहले भगवान शिव के भजन गाये गए, और कुछ देर बाद भारतीय शास्त्रीय नृत्यों का समय आया। स्टेज में 5 तरह की प्रस्तुतियाँ दी गयीं जिसमें सबसे पहले छोटे बच्चों की प्रस्तुति थी, और उम्र के हिसाब से बढ़ते हुए आखरी में एकल प्रस्तुतियाँ दी गयी। अधिकतर कत्थक नृत्य ही किया गया था, सभी नृत्यों में कोई ना कोई भगवान शिव और माता पार्वती के रूपों और उनकी कथाओं के वर्णन दिए गए थे।

आज रात सभी ने अपने नृत्यों की खुबसूरती से लोगों का दिल जीत लिया। बाद में जब रात के खाने का वक्त हुआ तब एक छोटी सी कत्थक वाली बच्ची लाइन में मेरे पास आ गयी, मैंने कहा "नाम सू?"। उसने जो नाम बताया वो तो मैं भूल गया, लेकिन मुझे उससे बात करने में बहुत मज़ा आया।

और आज की रात भी हमने हरित जी के घर में गुज़ारी और हमारे सोने के साथ ही हमारा आज का यह दिन भी समाप्त हो गया।

2 मार्च, 2022
खुशबू सूंघ कर हमारी भूख और भी बढ़ गयी

हमारा आज का सफ़र शुरू हुआ हरित जी के घर से। वहाँ हम लोग सुबह 7 बजे आराम से उठ कर, नहाए–धोए और तैयार हो कर आश्रम की तरफ़ गुरुजी को अलविदा बोलने के लिए चल दिए, घर से निकलते वक्त आसपास मुझे एक कोयल कूकती दिखी और उसे देख कर मुझे एक श्लोक याद आ गया –

काकः कृष्ण पिकः कृष्ण को भेद पिक काक़यो।
वसंत समय प्राप्ते काकः काकः पिक पिक।।

जिसका अर्थ कुछ ऐसे हैं – कौआ भी काला होता है और कोयल भी काली होती है, दोनों के रंग में कोई भेद भी नहीं होता, मगर बसंत के समय में पता चलता है कि कौआ – कौआ है और कोयल – कोयल है।

गुरुजी के यहाँ शिवरात्रि के बाद का आज एक आम दिन था, हम लोगों के आश्रम में घुसने के बाद हमें गुरूमाँ परम पूज्य स्वामीनी धन्यानंद जी के दर्शन हुए (गुरु माँ आपने काम में बहुत लीन रहती हैं आश्रम के सभी लोग उनकी आज्ञा मानते हैं, और वे अगर किसी से भी बात कर रही है तो बहुत प्रेम से करेंगी, यह उनकी ख़ासियत हैं)। उन्होंने बताया कि उनके पास सेरेमोनी और पूजा के फ़ोटोज़ जमा करने के लिए कोई साधन नहीं हैं।

हम आशुतोष जी के पास गए और इस समस्या का समाधान निकालने के लिए मदद माँगी, सोच–विचार के बाद आशुतोष जी ने अपना लैपटॉप निकाल कर उसमें डेटा कॉपी करवा लिया, व कुछ देर बागीचे में बातें करने के बाद, हम गुरुजी के पास गए और आज्ञा माँगी प्रस्थान करने की, आश्रम से निकलकर हम लोगों ने लगभग 6 घंटे सफ़र करने के बाद पाया की हम जूनागढ़ पहुंच गए।

गिरनार पर्वत, जूनागढ़, गुजरात

जूनागढ बहुत ही पौराणिक और धार्मिक स्थल माना जाता हैं और यहाँ की बोली गुड़ की तरह मीठी लगती है। जूनागढ़ में एक पर्वत भी हैं जिसे आप गिरनार के नाम से जानते है। इसकी चढ़ाई के लिए लोगों ने इस पर 9999 सीढ़ियाँ बना रखी है, और इस पर पूरे एशिया की सबसे बड़ी रोपवे भी लगी है, जो यात्रियों को 'केबल बस' के द्वारा चढ़ाने व उतारने के काम आती हैं। सीढ़ियों से चढ़ते वक्त आपको कम से कम 400 देवी देवताओं के मंदिर मिलेंगे, जिनके दर्शन का आनंद लेते हुए आप चोटी तक पहुँच सकते है।

अगर आप किसी भी जूनागढ़ में रहने वाले से घूमने की जगह पूछेंगे, तो उसका पहला उत्तर गिरनार पर्वत ही होगा, और उन सभी लोगों का कहना है की गिरनार पर्वत पर चढ़ना एकदम सुरक्षित है, इसी के साथ आपको बता दूँ कि यह पर्वत काफ़ी उंचा है।

राजकोट के आश्रम से निकलने के बाद हम पहुँचे जूनागढ़ कृषि अनुसंधान केंद्र एवं विश्वविद्यालय। यहाँ के वी.आई.पी गेस्ट हाउस में रुककर, अपने सामान को ठिकाने लगाने के बाद लगभग दो बजे; हम सभी लोगों ने पास में बने एक ढाबे में खाना खाने का निर्णय किया। नंदी की कमर से सामान का बोझ हटाने के बाद नंदी भी पूरा हल्केपन का मज़ा ले रहा था।

ढाबे के पास पहुँचकर हमने देखा एक गुजराती मोटाभाई अपने ग्राहकों को बड़ी तेज़ी से बहुत खुश्बुदार भोजन खिला रहा था, खुश्बू सूंघ कर हमारी भूख और भी बढ़ गयी। ढाबे में जा कर हम खाना खाने बैठ गए, गुजराती मोटाभाई ने आलू की सब्ज़ी, रोटी व रोटला, बैंगन का भरता छाछ हमारे सामने परोस दिए, खाना बहुत ही स्वादिष्ट बना था, ढाबे से गेस्ट हाउस वापस आने के बाद हमारा बाक़ी दिन हमने कमरे में थकान निकालने में बिता दिया, और आज का हमारा दिन ऐसे ही ख़त्म हो जाता है।

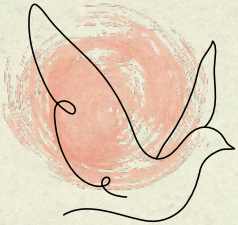

3 मार्च, 2022
जूनागढ़ आएँ है तो गिरनार पर्वत ज़रूर चढ़िए

आज का दिन मेरा शुरू हुआ लगभग 8 बजे सब के उठ जाने के बाद। आज हमें यात्रा करने नहीं जाना था, आज हमें जूनागढ़ कृषि अनुसंधान केंद्र व विश्वविद्यालय में विडीओ शूट करने जाना था (इसीलिए तो हम यात्रा कर रहें हैं)।

तो आज के वृतांत बताने से पहले मैं आपको बता दूँ, विश्वविद्यालय अपने छात्रों को यह सिखाता हैं कि कैसे आप अपने ज्ञान का उपयोग कर के कृषि करने वाले लोगों का काम आसान बना सकते हैं व उनकी फसलों की उत्पादन कैसे बढ़ा सकते हैं।

हमनें लगभग 8:30 बजे ही गेस्ट हाउस में आज का नाश्ता (सादे पराँठे, दही व आचार) किया। गेस्ट हाउस में काम करने वाला एक लड़का मेरा दोस्त बन गया, उसका नाम चीकू था वह हमें खाना व नाश्ता परोसा करता था। गए दिन सुबह मुझे अचरज वाली बात तब लगी जब मुझे पता चला कि सारे गेस्ट हाउस में हमारे अलावा कोई भी नहीं था।
लगभग 9 बजे के आसपास हमनें आज का, जे॰ए॰यू॰ में वीडियोग्राफी का, अपना काम शुरू किया। सबसे पहले हमें एंजिनीरिंग सेक्टर की तरफ़ जाना है, वहाँ पहुँचकर, नीलेश और कुबेर भइया नें मुझे टास्क दिया कि जब वे शिक्षक, विद्यार्थियों व उनके बनाए हुए मॉडल्स की फ़ोटो ले रहे हों तब मुझे उनकी फ़ोटो खींचनी हैं। मेरे हिसाब से उनकी बात सही भी थीं, फ़ोटो कहाँ से कैसे व किसने लिया है इसका पता भी रहना चाहिए। काफ़ी देर फोटोशूट करने के बाद हमनें 6 विद्यार्थियों से साक्षात्कार किए। वे सभी बहुत ही मेधावी छात्र थे, मगर जब इन में से एक का साक्षात्कार कर रहें थे तो हम लोग सवाल कुछ और पूछ रहे है और वो जवाब कुछ और दे रहे हैं, कुबेर भइया ने तो उन्हें उनके मुँह पर ही उसके साक्षात्कार को डल बोल दिया।

विश्वविद्यालय के काफ़ी सारे छात्र मुझे भइया बोल कर सम्बोधित कर रहे थे, बाद में जब उन्हें पता चला की मैं 11 कक्षा में पढ़ता हूँ तो वे मुझसे घुलमिल गए। जेएयू में 3 लोगों ने मुझे एक ही बात कही जब उन्हें पता चला मैं राजस्थान से हूँ, उन्होंने कहा अगर आप जूनागढ़ आएँ है तो गिरनार पर्वत ज़रूर चढ़िऐ।

जे॰ए॰यू॰ में मैंने पहली बार बहुत सारे बड़े बड़े ड्रोनों को एक साथ देखा। विश्वविद्यालय के अध्यापक अपने छात्रों को उन सभी ड्रोनस के उपयोग करके खेतो में पेस्टिसायड्ज़ (जिसके छिड़काव आपने हाथों से करने के वक्त बहुत सारे किसान बीमार हो जाते हैं) छिड़काव करना सिखा रहे थे व कहाँ करना हैं यह भी सिखा रहे थे।

ड्रोंनस के बारे में मुझे पता चला कि आप प्राइवेट व मिलिटेरी जगहों पर ड्रोन का उपयोग नहीं कर सकते, अगर करते है तो पूछ कर करना होगा, अगर आप नियमों का उल्लंघन करते है तो आप पर कार्यवाही करने का उन्हें पूरा अधिकार हैं।

जेएयू से निकलने के बाद वापस आकर लगभग 2 बजे हमने भोजन किया (आलू गोभी की सब्ज़ी, रोटी, बैंगन का भरता, दाल व रोटी) व बाक़ी बचा हुआ दिन हमनें गेस्ट हाउस में बिताया, और ऐसे–ऐसे हमारा आज का दिन ख़त्म होता हैं।

4 मार्च, 2022
मेरे लिए भी थोड़ी अजीब स्थिति थी

मेरे दिन की शुरुआत खिड़की के पास पक्षियों की आवाज के साथ हुई। आज मुझे अपने कपड़े धोने पड़े क्योंकि मैंने पिछले 4 दिनों से स्नान नहीं किया था और यही मेरी सीमा थी। मुझे घृणा महसूस हुई क्योंकि मेरे कंधे भी असहनीय गंध पैदा कर रहे थे। तो, अंत में मैंने स्नान करने का फैसला किया, और फिर मुझे लगा कि मुझे अपने कपड़े धोने चाहिए। मेरे पास केवल 2 जोड़ी कपड़े और केवल एक अतिरिक्त टी–शर्ट है, इसलिए मुझे इस बार अपनी दूसरी जोड़ी धोने का कोई मौका नहीं मिला।

नहाने के बाद मैंने महसूस किया कि ये मेरे कंधे नहीं थे जो महक रहे थे वो मेरी टी–शर्ट का कॉलर था। मैं गेस्ट हाउस की छत पर गया जहाँ दूसरे लोग आराम कर रहे थे, और मैंने जो देखा उस पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था! मैंने देखा – मेरे सामने 1100 मीटर ऊँचा गिरनार पर्वत खड़े थे, इतना पास लग रहे थे जैसे मैं उन्हें छू सकता हूँ!

मैं सीढ़ियों से नीचे उतरकर नीलेश भइया से कहने लगा कि – 'यहाँ से अद्भुत लग रहा है और हमें यहाँ के अलावा गिरनार पर्वत की बेहतर फोटो शूट करने का कोई और मौका नहीं मिलेगा'! लेकिन उनकी प्रतिक्रिया बिल्कुल अलग थी, उन्होंने कहा – 'वह सही फोटो नहीं होगा; अगर हम अभी शूट करते हैं तो, आपको गिरिनार की सबसे अच्छी फोटो शूट करने के लिए सुबह 5 बजे उठना होगा, क्योंकि बैकग्राउंड (आकाश) फोकस ऑब्जेक्ट की तुलना में उज्जवल है (क्योंकि सूरज पहाड़ के पीछे था) और जब भी फोकस ऑब्जेक्ट बैकग्राउंड से गहरा होगा, तो फोटो सबसे खराब होगी'।

आज मैं वापस गेस्ट हाउस में रुका क्योंकि कल की तस्वीरें ठीक से इकट्ठी नहीं थीं। मेरे पास पूरे वीआईपी–गेस्ट हाउस में करने के लिए कोई काम नहीं था, इसलिए मैंने अपना कमरा बंद कर दिया और चीकू से बात करने के लिए किचन में चला गया। उसने मुझसे कहा कि वह ओडिशा से है, और वह अंग्रेजी बोल और पढ़ सकता है लेकिन हिंदी नहीं, यह उसके और मेरे लिए भी थोड़ी अजीब स्थिति थी।

हम ऐसे देश में रहते हैं जहां लोग 500 से अधिक भाषाएं बोलते हैं, और केवल 22 आधिकारिक हैं, लेकिन इससे तिरंगे के लिए हमारे बंधन पर कोई असर नहीं पड़ता है।

कहानी पर वापस, लगभग 3 बजे टीम जे॰ए॰यू॰ की शूटिंग से वापस आती है, दोपहर के भोजन के बाद रामकेश भइया ने कहा 'अपना सारा सामान पैक कर लो, हम जा रहे है'। वह सब अचानक था, लेकिन ठीक है! हम अपना सारा सामान शाम 6 बजे

श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर, गुजरात

के भीतर पैक करते हैं और सोमनाथ मंदिर की ओर अपनी यात्रा फिर से शुरू करते हैं, जो जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय से 150 किमी दूर है।

रात 10 बजे हम आखिरकार सोमनाथ मंदिर पहुंचे, लेकिन हमें आने में बहुत देर हो गई। इसलिए कल हमने भगवान सोमनाथ का आशीर्वाद लेने का फैसला किया।

हम सब रात को पास के एक सरकारी अतिथि भवन में सोने को तैयार हो गए। जब हम शयन कक्ष में प्रवेश करते हैं तो देखा, फर्श चमकते हुए दर्पण की तरह साफ किया गया था, शौचालय और स्नान की सुविधा अद्भुत थी और तीर्थयात्रियों और यात्रियों के लिए अनुकूल थी। सरकारी अतिथि भवन में प्रति व्यक्ति प्रति रात का खर्चा मात्र 90/– रुपये था।

भोजन की सुविधा को भी कम करके नहीं आंका जा सकता है। भोजन स्वादिष्ट था फिर भी कीमत स्पष्ट रूप से कम; जैसे ₹70 रुपये प्रति भोजन, और परोसने की सुविधा अद्भुत थी। हमने जो खाना खाया वह था खिचड़ी, रोटी, आलू की सब्जी, पत्ता गोभी की सब्जी, बैगन का भरता और हलवा।

खाना खाने के बाद जब हम अतिथि भवन की ओर जा रहे थे, एक लंबी दाढ़ी और बालों वाला एक लड़का, जिसके पास एक जोड़ी जूते या चप्पल नहीं थे (वह एक भिखारी नहीं बल्कि एक यात्री था), उसने मदद मांगी और रामकेश भइया ने उसे कुछ पैसे दिए, ताकि वह रात में अपने लिए कुछ खाने और बिस्तर की व्यवस्था कर सके।

और किस्मत से उसने वही डॉरमेटरी रूम बुक कर लिया जिसमें हम ठहरे थे। वह हमें अपनी पत्नी द्वारा घर से निकाले जाने की अपनी कहानी बताता है, वह हमें यह भी बताता है कि वह एक मानसिक रोगी है और मेरे अनुसार जब तक वह यह नहीं सोच रहा है कि वह एक मानसिक रोगी है, वह ठीक नहीं हो सकता। उनकी दुख भरी दास्तान सुनकर हम तकिये के सहारे सो गए और इस तरह हमारी आज की यात्रा समाप्त हुई।

5 मार्च, 2022
इतनी भव्य आरती नहीं देखी

हमारा आज का दिन शुरू हुआ सुबह के पाँच बजे, सच कहूँ तो मुझे आज रात को ढंग से नींद ही नहीं आयी थी, रात भर मच्छर काट रहे थे। पर जब सुबह–सुबह पाँच बजा तो मेरे आँख खुलने से पहले ही मेरी चद्दर खिंच ली गयी, अभी तक सूर्योदय भी

नहीं हुआ था, ऐसा लग रहा था रात ही रात में सोकर उठ गए। उठाकर मुझे तुरंत नहाने का आदेश दिया गया, मुझ से पहले नीलेश भइया को उठाया गया था और सबसे पहले उन्हें नहाना पड़ा ठंडे पानी से, मेरी बारी आने तक गरम पानी की व्यस्था हो चुकी थी।

मेरे हिसाब से सोमनाथ जी के दर्शन से पहले हमें नहाना ज़रूर चाहिए क्योंकि जब हम अपने शरीर को स्वच्छ करके अपने नाथ से मिलते हैं तो हमें अपनी शरीर में एक अलग ही शाश्वत ऊर्जा का प्रभाव महसूस होता हैं।

सोमनाथ जी के इस भव्य मंदिर को देखकर मुझे एक श्लोक याद आ गया –

यज्जातो दूरमृदैतिदेवन्तदुसप्तस्यतयेवैतिं ।
दूरङ्गुमज्ज्योतिषाज्ज्योतिरेकन्तमेमनं शिवसङ्कल्प्यमस्तु।।

मैंने अपने जीवन में कभी इतने भव्य मंदिर में इतनी भव्य आरती नहीं देखी थी, कहा जाता हैं विश्व का पहला नाद नटराज के डमरू से निकला हैं जिसे हम ओम् के नाम से भी जानते हैं, और आज भी विश्व के वैज्ञानिक अभी भी ओम् के पीछे के रहस्य को जानने में लगे हैं (यह बात सच हैं की स्विज़रलैंड में सर्न एजेन्सी में भगवान नटराज की मूर्ति लगी है)।

सोमनाथ जी के दर्शन करते वक्त मैंने नोटिस किया हम जब रानी की बाव या सूर्यमंदिर में गए थे तो वहाँ मूर्तियाँ सैंड्स्टोन पर बनायी गई थी, लेकिन सोमनाथ में मंदिर की दीवारों पर जो मूर्तियाँ बनायी गयी है, वे अलग प्रतीत हो रही है और उन पर रंग भी किया गया है।

सोमनाथ जी के यहाँ जो लोग सभी 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन कर नहीं पाते उनकी जानकारी के लिए बाक़ी 11 ज्योतिर्लिंग व उनकी मूर्तियाँ बनायी गयीं हैं जो उनकी कहानियां भी दर्शाती हैं। मेरे हिसाब से भगवान शिव आपके वर्तमान का भी ध्यान रखते हैं, आपने भगवान शिव के स्तम्भ वाली कहानी सुन रखी होगी अगर नहीं सुनी तो यह लीजिए–

एक बार भगवान विष्णु व भगवान ब्रम्हा के बीच यह बहस छिड़ गयी कि किसका जन्म पहले हुआ, और अंततः जब किसी निर्णय पर नहीं पहुँचे तो दोनों के बीच युद्ध छिड़ गया। और जब भगवान विष्णु व ब्रम्हा का युद्ध शुरू हुआ तो तीनों लोकों में हाहाकार मच गया, धरती पर समुद्र की लहरें आसमान को छूनें लगी ज़मीन पर भूकंप आने लगा, आसमान में दो बड़ी–बड़ी शक्तियाँ लड़ते हुए दिखाई देने लगी। आचानक से दोनों के बीच एक स्तंभ आकर खड़ा हो गया जिसका ना तो कोई आदि था ना कोई

अंत, दोनों भग़वनों को खुद से बड़ी एक शक्ति का आभास हुआ, और वे दोनों उस स्तंभ का आदि व अंत ढूँढने निकल गए। भगवान विष्णु अंत (भविष्य) देखने के लिए स्तम्भ की ऊपरी तरफ़ चले गए व भगवान ब्रम्हा आदि (भूतकाल) देखने चल दिए। कई सौ सालों तक वे दोनों आदि व अंत ढूँढते रहे लेकिन उस स्तंभ का कोई छोर नहीं दिखा। और आखिर में दोनों वापस आ गए। भगवान विष्णु ने अपने पक्ष में कहा के उन्हें उस स्तम्भ का कोई अंत नहीं मिला मगर भगवान ब्रम्हा ने झूठ कहाँ कि उन्हें उस स्तम्भ का आदि मिल गया। तभी भगवान आदिशंकर वहाँ पर बहुत ही गुस्से में प्रकट हुए व दोनों भगवानो को कहा "यह स्तम्भ मेरा हैं, व इसका कोई भी आदि व अंत नहीं है"। और गुस्से में भगवान ब्रम्हा को यह श्राप दिया की अब से उनकी कोई भी पूजा नहीं करेगा, मगर विष्णु ने झूठ नहीं बोला इसलिए भक्त उनकी पूजा न करके उनके अवतारों की सेवा करेंगे।

पास ही एक और भग़वान सोमनाथ जी का मंदिर है जिसे रानी अहिल्या बाई जी के द्वारा बनाया गया था, अहिल्याबाई होलकर जी को ऐसे ही कार्यों के कारण– देवी माना गया है।

सोमनाथ जी के दर्शन करते वक्त मैंने देखा पास ही समुद्र है जिसे "नो मेन्स लैंड" भी कहते है।

सोमनाथजी के भव्य दर्शन करने के बाद हमने नाश्ते में जलेबी, फ़ाफड़ा, खम्मन व समोसे खाए, इस बार खम्मन उतने अच्छे नहीं लगे जितने पिछले वाले लगे थे। नाश्ता करने के बाद हम नंदी की कमर पर बैठ गए, और समुद्र का छोर पास से देखने के लिए चल दिए। वहाँ मैंने आज दिन में दूसरी बार स्नान किया, ठंडा–ठंडा पानी था। तो बात ऐसी थी कि मुझे तैरना नहीं आता हैं इसलिए मैं बाल्टी में पानी भर के ही नहा लिया, और मेरे नहाने के बाद हम आपनी पहली सफ़ारी के लिए निकल पड़े।

आगे जाने के बाद हम गिर राष्ट्रीय उद्यान के पास 1 बजे ही पहुँच गए थे, और फ़ैसला किया गया की पार्क अगर 3 बजे खुलने वाला हैं तो हम पहले कहीं बैठकर खाना खा लेते हैं। तो हम सफ़ारी पास के जंगल में ही एक किलॉमेटर अंदर बने एक ढाबे में खाना खाया। रोटला, आलू–सहजन की सब्ज़ी, चने की सब्ज़ी, बैंगन के भरते को प्याज़ और टमाटर के साथ खाने के बाद; जग भर के खूब सारा छास पिकर हम लोगों ने काफ़ी देर उस ढाबे में आम के पेड़ के नीचे बितायी।

उस वक्त मुझे महसूस हुआ कि गुजरात में पौराणिक और आधुनिक चीजें दोनों साथ साथ बने हुए हैं, रानी की बाव से लेकर जे॰ए॰यू॰ तक। शुरुआत में जब हम गुजरात में घुसे थे तो मुझे यहाँ जगह कुछ ख़ास नहीं लगी थी क्योंकि मुझे लगता था की;

गिर राष्ट्रीय उद्यान के पास गुजराती भोजन

जहां जीवन जीने की चुनौतियाँ नहीं होंगी वहाँ लोग मेहनत नहीं करेंगे, और अगर लोग मेहनत नहीं करेंगे तो उस जगह विकास नहीं होगा।

मगर गुजरात मेरे हिसाब से राजस्थान से भी अच्छी जगह है घूमने के लिए, यहाँ हरियाली बहुत हैं। यहाँ के लोग यों तो आपने काम से काम रखते हैं मगर जब बोलना शुरू करते हैं तो ऐसा लगता है गुड़ भी शर्मा जाएगा। यहाँ के लोगों में राष्ट्र प्रेम बहुत भर–भर के है, मगर बस एक बात की कमी है जो मुझे गुजरात में खलती रही है, की यहाँ शहरी इलाक़ों को लोग साफ़ नहीं रखते।

इसी बात से मुझे सफ़र का पहला दिन याद आ गया जब मैं भी नंदी के बाहर प्लास्टिक फेंक रहा था, हुआ ये की जब मैंने चॉकलेट का रैपर फेंकने के लिए खिड़की खोली और फेंकने ही वाला था तब सभी भइया लोग ज़ोर से चिल्ला पड़े। इतनी ज़ोर की आवाज़ सुन कर कुबेर भइया, जो गाड़ी चला रहे थे, डर गये।

रामकेश भइया ने बताया की रोड पर न फेंक कर; हमें सारे कचरे को आगे मिलनेवाले डस्टबीन में डालना चाहिए क्योंकि रोड के पास फेंका गया कचरा साफ़ करना व्यवस्था को बहुत महँगा पड़ जाता है व उसी जगह पड़ा रह जाता है। हम अगर कचरा डस्टबीन में डाले तो इसे देश के प्रति हमारा छोटा सा एक सहयोग बोल सकते हैं।

गुजरात में शहरी इलाक़े में सफ़ाई न देखकर मुझे अहसास हुआ की आसपास के वातावरण को साफ़ करना हमारा कर्तव्य है।

लगभग 2:30 बजे हम लोग गीर सफ़ारी पहुंच गए। वहाँ लम्बी लाईन में इन्तज़ार करने के बाद हमें 5 टिकटें मिल गयी और पास ही खड़ी बसों में हम सबसे पीछे वाली सीट पर जा कर बैठ गए। लगभग 5 मिनट में हम जंगल गीर सफ़ारी के गेट के अंदर थे। शुरुआत में लगभग 1 किमी. तक सिर्फ़ एक चीतल दिखा, मगर थोड़ी और दूर जाने पर हमें एक 5 से 6 शेरों एक झुंड दिखा। उस झुंड में शायद दो मादा शेर और बाक़ी छोटे शावक थे, सभी सो रहे थे, शेरों की प्रजाति एक मात्र ऐसी बिल्लियों की प्रजाति है जो झुंड में रहती हैं, और ये अपनी ज़िंदगी का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा सोते हुए बिता देते हैं।

हमने गीर राष्ट्रीय उद्यान के सफ़ारी में हिरन की तीन (नीलगाय, धब्बेदार हिरण व साम्भर) प्रजाति देखीं, एक प्रजाति सियार की, बंदर, बचाए हुए तेंदुए आदि देखा। मैंने तेंदुओं को पहली बार देखा था, और मुझे जितना लगा था तेंदुआ उस से छोटा निकला। मुझे गाइड ने बताया के तेंदुए जब बूढ़े हो जाते हैं तब अनियमित भोजन करने लगतें हैं, और तब वें मानवभक्षी बन जाते हैं।

जंगल साल के 6 महीने हरा और 6 महीने सूखा रहता हैं, हम लोग 3:30 बजे भरी धूप में गए थे इसलिए शायद जंगल में पतझड़ जैसा सूखा दिख रहा था। ऐसा कहा जाता हैं कि शेर सूखे में आसानी से शिकार कर पाता है। हमने शेरों को उस वक्त देखा था जब वे सो रहे थे, तो ऐसा लग रहा था की शेरों को कोई फ़रक नहीं पड़ रहा है इंसानो को देखकर, और मेरे ख़याल से पड़ना भी नहीं चाहिए, क्योंकि लोग रोज़ ही उन्हें देखने आते है।

सफ़ारी से निकलकर राष्ट्रीय राजमार्ग की तरफ़ हम लोग अपने अगले गंतव्य एकता की मूर्ति की तरफ़ चल दिए, जो की हमसे 10 घंटे की दूरी पर था।

लगभग 4 घंटे का सफ़र तय करके हमनें एक पेट्रोल पम्प के पास अपना तम्बू गाड़ दिया, और आज का हमारा सफ़र ऐसे ख़त्म होता है।

6 मार्च, 2022

और पहली बार मुझे अपने भारतीय होने का गर्व महसूस हुआ

मेरा आज का दिन शुरू हुआ एक पेट्रोल पम्प के पास, सूर्योदय से पहले। और सच बताया जाए तो यात्रा करना आसान नहीं हैं, आपको रास्ते में कई सारे ठग, ढोंगी, प्रमाणिक ठग व सभी तरह के लोग मिलेंगे। आप को एलर्जी और घर वाले दूसरे तरह की समस्याएं हो सकती हैं। मैंने अपना सफ़र शुरू किया राजस्थान के एक छोटे से ज़िले बीकानेर से जिससे बाहर मैं पिछले 6 साल से नहीं गया था।

भइया लोगों के साथ जाने का मौक़ा मुझे बार–बार नहीं मिलने वाला था व मैंने आपको अपने किसी भी लेख में उनके बारे में ज्यादा नहीं बताया हैं, तो अभी थोड़ा बहुत बता देता हूँ, नंदी पर सवार सभी सदस्य (मेरे अलावा) प्रफ़ेशनल फोटोग्राफ़र है व उन्हें फ़िलहाल विश्वविद्यालयों की शूटिंग के लिए सफ़र करना हैं, इनकी कम्पनी नाम रोज़हब है।

तो आज मुझे सूर्योदय से पहले उठा दिया गया, मेरी एक आदत है की अगर कोई मेरी चद्दर खींच कर नहीं उठाएगा तो मैं दोपहर तक सोता ही रहूँगा। मेरे उठने के 5 मिनट के अंदर ही सूर्य उदय हो रहा था, सूर्य को बाद में उगते देख मुझे जीत का

अहसास हो रहा था, मुझे वैसा ही लग रहा था जैसा कछुए को ख़रगोश से जीतने के बाद लगा होगा।

मुझे पेट्रोल पम्प के पास से जैन साधिकाएँ जाते हुए दिखी जिन्होंने सफ़ेद कपड़े पहने हुए थी। जैन धर्म; देश के सबसे दुस्साध्य धर्मों में से एक माना जाता है, अगर आपने जैन धर्म में साधना के कठोर रास्ते पर चलना चुना है तो आप किसी भी गाड़ी में सफ़र नहीं कर सकते, मैंने देखा लगभग 30 से 40 जैन लोग रास्ते में एक ही तरफ़ जा रहे हैं। जैन धर्म के प्रसंग में मैंने जाना कि उनके जो कपड़े है उन्हें सिला नहीं गया है, बल्कि उन्होंने सिर्फ़ धोतियों से अपना शरीर ढक रखा है।

तो तम्बू को समेटने के बाद हम सभी नंदी की कमर पर लद गए और वहीं पेट्रोल पम्प पर नंदी को थोड़ा खाना खिलाने के बाद हम सरदार वल्लभ भाई पटेल की 182 मीटर ऊँची मूर्ति की तरफ़ चल दिए, जिसे हम एकता की मूर्ति या Statue of Unity के नाम से जानते हैं।

एकता की मूर्ति से हम लगभग 6 घंटे के रास्ते पर थे, रास्ते में हम आनंद ज़िले के पास से होकर गुज़रे जहां सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपना काफ़ी समय बिताया था। आनंद ज़िले में अमूल की भी शुरुआत हुई थी, और यहीं वह जगह हैं जहां से श्वेत क्रांति की शुरुआत हुई थी, और आज हममें से हर किसी ने उस कम्पनी के उत्पादों का लाभ उठाया है।

मेरे हिसाब से अगर आप यहाँ आना चाहते हैं तो 4 से 7 के बीच में आइए, और 7 से 8 तक के बीच में लाइट शो देखिए जिसमें एकता की मूर्ति पर प्रोजेक्शन किया जाता है।

जैसे–तैसे हम एकता नगर को पहुँचे, इस समय भग़वान भास्कर अपने चरम तेज पर थे, हमने सोचा क्यूँ न इस पास बने मॉल में थोड़ा टाइम पास कर लिया जाए। हम गए तो इसी मक़सद से, थे मगर पता नहीं नीलेश और कुबेर भइया के क्या जंची खुद को ठग़वा कर आ गए। मुझे लकड़ी की पेंट ब्रश चाहिए थी वो तो नहीं मिली, फिर आख़िरकार भूख के मारे हम वहाँ पास ही बने एक फूड एंड नूट्रिशन सेंटर में गए, वहाँ देसी खाना (खिचड़ी, दही, इडली व साम्भर) खा कर हम सब लगभग 4 बजे के आसपास, एकता परिसर की टिकट लेकर बस की लाइन में खड़े हो गए। पर एक अधेड़ उम्र का आदमी आपने बेटे को लेकर लाइन के नियम तोड़ते हुए आगे जा रहा था, उसे देखकर सागर भइया गुस्सा हो गए और उसी आदमी को डाँटने लगे, और मेरे हिसाब से उन्होंने ऐसा कर के कोई ग़लत काम नहीं किया।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, केवड़िया, गुजरात

बस में चढ़ने के कुछ देर बाद जब बस लगभग 5 किमी. चल गयी होगी तब हमें सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति दिखनी शुरू हो गयी। यह मूर्ति बहुत सुंदर जगह बनायी गयी है, जहां सतपुड़ा व विध्यांचल आकर मिलते हैं और पास ही से नर्मदा नदी गुजरती हैं। यहाँ हमें प्राकृतिक एकता के साथ–साथ भारत की अनादि सांस्कृतिक व प्रांतीय एकता के प्रतीक – सरदार पटेल की मूर्ति भी देखने को मिलती हैं।

जब हम अंदर घुसे तब मुझे एहसास हुआ की हमसे सरदार जी की दूरी लगभग 1 किमी. थी, स्वचालित सीढ़ी बनायी गयी थी। सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति के ठीक नीचे एक म्यूज़ियम बनाया गया था, जिसमें बिभिन्न डिस्प्ले के माध्यम से बनाया गया था की मूर्ति को बनाने के लिए क्या–क्या सहयोग मिले; और कैसे मिले। वल्लभ भाई पटेल के ऊपर एक छोटी सी फ़िल्म भी बनायी हुई थी।

थोड़ी देर बाद हम वल्लभभाई पटेल की मूर्ति के एकदम पास जाकर खड़े हो गए, और मुझे महसूस हुआ की मूर्ति की सबसे छोटी वाली उँगली का आधा हिस्सा भी मुझसे बड़ा था।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति दुनिया की सबसे बड़ी मूर्ति है! दरसल यह मूर्ति; इंडीयन एंजिनीरिंग मार्बल – की सबसे बड़ी निशानी हैं, और इस मूर्ति को बनाने के लिए देश भर के लाखों किसानो से लोहा दान लिया गया था। इस मूर्ति ने बता दिया है, की भारत अब कभी भी आधुनिक निर्माण के तौर पर पीछे नहीं रहेगा, और पहली बार मुझे अपने भारतीय होने का गर्व महसूस हुआ।

एकता की मूर्ति देखने के बाद हमने एकता नगर से निकल कर एक ढाबे में भोजन किया और आज भी हम एक पेट्रोल पम्प के पास ही तम्बू गाढ़ कर सो गए, और हमारा आज का सफ़र ऐसे समाप्त होता हैं।

7 मार्च, 2022

खेती को देखा समझा और अंगूर खाए

हमारा आज का दिन पेट्रोल पम्प के पास ही शुरू हुआ, कल को मिला कर आज भी मैं सूरज से आगे था, अब तो आदत सी पड़ने लगी थी। हमने पहाड़ी क्षेत्र के पास ही तम्बू गाड़ा था इसलिए जब हमनें आज नंदी की कमर पर सवारी करना शुरू किया

तो हमें जंगल के अंदर तक जाने में ज्यादा देर नहीं लगी, थोड़ी दूर चल कर हमनें देखा के आदिवासी समाज के लोग गुड़ बना रहे थे।

वे सबसे पहले गन्ने के रस को एक बड़े से कढ़ाई में डालते और उसे हल्का हल्का गर्म करते हैं। फिर वे उसमें, भिंडी को चिपचिपा बनाने वाले रस को भिंडी के पौधे से निकालकर, उस कढ़ाई में डाल के एक साथ उबालते हैं। कुछ देर बाद–बाद उबलते रस के ऊपर जमा मैल को हटा कर, रस को गाड़ा करते जाते है। एक कड़ाई से दूसरे में डाल देंते हैं, और ऐसे करते–करते वे जब चौथी कढ़ाई पर आते–आते गन्ने का रस गुड़ बन जाता हैं, और फिर उसे एक बड़ी चौकोर थाली में डालकर ठण्डा होने के लिए रख देते है। जब वह गुड़ लगभग समान्य तापमान में आ जाता हैं तब उसे टीन के डब्बे में भर कर दारू की फ़ैक्टरी में भेज दिया जाता है। और काफ़ी सारा गुड़ किलो–किलो के हिसाब से पैक करके बाज़ार में बेच दिया जाता हैं।

मीठे व ताज़ा गुड़ को चखने के बाद हम सभी और आगे चल दिए। हम जिस तरफ जा रहे हैं, वो गुजरात का दक्षिण–पश्चिम इलाक़ा हैं। इस इलाक़े में पहले अधिक पानी नहीं होता था मगर सरदार सरोवर बांध बनाने के बाद जब नहर आयी तो लोग यहाँ पर तरह–तरह की खेती करने लगे जैसे गन्ना, भिंडी, गेहूं, प्याज़, आलू आदि। यही हाल कुछ राजस्थान का भी है, जैसे जैसे पानी की बेहतर उपलब्ध हो रही है, कृषि विकास भी हो रहा हैं।

थोड़ा और आगे जाने पर मैंने देखा की वनस्पतियों में भारी बदलाव आया हैं, उनकी लम्बाई बढ़ गयी हैं और डालें कम हो गयी हैं, और पहाड़ी छेत्र में ऐसा हर जगह होता है। नंदी के और आगे बढ़ते हुए हमनें देखा की लोग रास्ते के किनारे स्ट्रोबेरी बेच रहे हैं, तो हमनें थोड़ी सी स्ट्रोबेरी ख़रीदकर चखी, और मुझे एक बात का अहसास सबसे पहले हुआ की स्ट्रोबेरी को सिनमा में जितना मीठा दिखाया जाता हैं, उसका 10 प्रतिशत भी यह स्ट्रॉबेरीज़ स्वाद नहीं देती।

आज मैंने पहेली बार ऐसी जगह देखी, जहां बड़े – बड़े पहाड़, बहुत सारी हरियाली और खूब सारी खेती एक साथ देखने को मिलती हैं। हम लगभग 11 बजे इन पहाड़ी रोड पर नंदी को चढ़ा दिया और निहारते–निहारते धीरे धीरे चल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर हमें एक झरने वाली जगह का पता चला। वह भी आदिवासी लोगों का ही इलाक़ा था, वह लोग मोटर के सहारे झरने से पानी गिरा रहे थे, (ताकि की टुरिस्ट आते रहें) क्योंकि जिस नदी से झरना बनता हैं वह एक मौसमी नदी थी।

वहाँ लकड़ी के काफ़ी सारे खिलौने बिक रहे थे, मैंने अपनी छोटी बहन (मासी की बेटी) के लिए लकड़ी का छल्ला ख़रीदा। वही मुझे काफ़ी सारे लकड़ी के सामान दिख रहे थे जो उन लोगों ने बनाए थे और कुछ खिलौने चीन से भी थे।

चलते–चलते हमने गुजरात को पीछे छोड़ दिया, और हम महाराष्ट्र में आ गए। यहाँ खेत, गुजरात की मात्रा से काफ़ी ज्यादा हैं। हमनें एक ऐसा पहाड़ भी देखा जो दूर से देखने पर मनुष्य के चहरे जैसा दिख रहा था, हमनें वहाँ अंगूर के खूब सारे खेत देखे। वहाँ का एक किसान के खेतों में जाकर हमने अंगूरो की खेती को देखा, समझा और अंगूर खाए।

आसपास के वातावरण के फ़ोटो खींचते हुए हमें बहुत देर हो गयी, और लगभग 3 बज गए। क्योंकि हम गाड़ी कम चला रहे थे निहार ज़्यादा रहे थे। और काफ़ी देर तक फ़ोटो खींचने और विडीओ बनाने के बाद हम एक महाराष्ट्रियन ढाबे के आगे आकार रुक गए। वहाँ सबने खाना (पनीर की सब्ज़ी, रोटी, छाछ) खाया, और सच कहा जाए तो यहाँ का खाना भी बाकियों को अच्छी ख़ासी टक्कर दे रहा था। खाना खाने के बाद हम त्रयम्बकेश्वर जी के सफ़र में आगे बढ़ गए।

महाराष्ट्र में आकर मैंने आपने एक पुराने दोस्त को कॉल लगा कर पूछ की वह महाराष्ट्र में कहा रहता हैं। मुझे उस से मिलने की कोई ज्यादा उम्मीदें लग नहीं रही थी और हुआ भी ऐसा ही। वो पुणे में रहता हैं, और हम नासिक आए हुए हैं। नासिक में घुसने के आधे घंटे बाद हमनें त्र्यम्बकेश्वर जी के मंदिर के बहुत पास आकर गाड़ी पार्क की। वहाँ के लोगों का कहना था कि मंदिर के पास बने एक कुंड में नहाकर दर्शन करना ज्यादा सही रहेगा, तो हम सभी लोगों ने पहले उस कुंड में स्नान किया और फिर दर्शन करने को चल दिए।

कुंड में स्नान करने के बाद हम सभी लोग दर्शन करने बढ़ गए। कुबेर और नीलेश भइया तो पहले ही निकल गए थे, दरसल मुझे तैरना बिलकुल नहीं आता और कुंड अधिक गहरा नहीं था, मुझे कुंड में नहाते वक्त बहुत मज़ा आ रहा था, बाद में रामकेश भइया को मुझे निकालने के लिए योगी के बुलडोज़र का उपयोग करना पड़ा। यह कुंड लगभग 200 साल पुराना हैं, और देवी अहिल्याबाई होलकर के द्वारा बनाया गया हैं। यह बहुत विशाल तो नहीं मगर बहुत ही शानदार मंदिर हैं, इसके हर कोने में नक्काशी की गयी हैं, मैं यह सोच भी नहीं सकता की मंदिर को कैसे बनाया गया होगा। आज कम से कम 1000 से भी ज़ादा लोग दर्शन करने आए हैं, और मंदिर के पास ही बहुत ही सारे लोग काफ़ी सारी चीजें बेच रहे हैं। हमनें वहाँ से शिवाजी राजे की दो छोटी–छोटी मूर्तियाँ ख़रीदी ।

त्रयम्बकेश्वर जी के भव्य दर्शन करने के बाद हम लोग चल दिये राहोरि कृषि विश्वविध्यालय की ओर जो 3 घंटे की दूरी पर हैं। पहुँचते–पहुँचते नंदी के चालक को छोड़कर सभी को नींद आ गयी। जब नींद खुली तो विश्वविद्यालय के गेस्ट हाउस पहुँच गये। हमनें जाकर सबसे पहले सोने का काम किया और हमारा आज का सफ़र ऐसे खत्म होता हैं।

त्रयम्बकेश्वर जी का मंदिर, नासिक, महाराष्ट्र

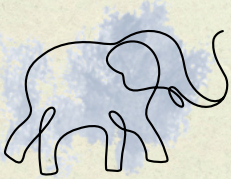

8 मार्च, 2022
महाराष्ट्र में हर जगह शिवाजी राजे के झंडे

मेरा दिन शुरू हुआ एक चद्दर की लड़ाई से, मैं अपनी इज्जत, नींद, ज़िंदगी और चद्दर के लिए लड़ रहा था। बात यह थी की आँठ बज गए थे और भइया लोगों को चाहिए था की मैं भी उनकी तरह बे फ़ालतू में 6 बजे उठूँ। हम लोग पिछले 2 दिन से सफ़र कर रहे थे और तम्बू में सो रहे थे, और कल रात 1 बजे ही गेस्ट हाउस पहुँचे थे। लड़ाई जीतने के बाद मैं वापस मेरी सपनों की रानी के पास चला गया, मगर मेरी नींद ज्यादा देर नहीं टिक पायी क्योंकि साढ़े आँठ बजे हमको नाश्ता करने जाना था। हम गेस्ट हाउस के भोजन कक्ष में गए, वहाँ हमनें महाराष्ट्रियन पोहा खाया, सच कहूँ तो मैंने राजस्थान, गुजरात व महाराष्ट्र तीनों जगह के पोहे खाए मगर सभी एक जैसे ही लगे।

हम जिस दिन महाराष्ट्र में घुसे थे तो हमनें लगभग हर जगह शिवाजी राजे का झंडा देखा, अब महाराष्ट्र की बात हो और शिवाजी राजे की बात न आए ऐसा कैसे हो सकता हैं? शिवाजी महाराज ने आधे से ज़्यादा भारत को मुग़लों के क़ब्ज़े में नहीं आने दिया। मुझे महाराष्ट्र में हर जगह शिवाजी राजे के झंडे लगे मिले, गाँव में बसे एक छोटे से घर से लेकर महानगरों तक हर जगह शिवाजी के झंडे लहरा रहे थे। लगभग 400 वर्ष बाद भी शिवाजी राजे लोगों के दिल में बसे हैं, और आगे भी बसे रहेंगे।

मुझे महाराष्ट्र में 3 चीजें बहुत शानदार लगी, पहली यहाँ के लोग महनती व ईमानदार हैं, दूसरी शिवाजी के प्रति लोगों का प्रेम, तीसरी यहाँ के किसान कृषि विज्ञान के प्रयोग में बहुत आगे हैं।

आज नीलेश, रामकेश व कुबेर भइया को शूटिंग के लिए जाना था, और सुबह 9 बजे के आसपास वे चले गए। मैं और सागर भइया दोनों अपने–अपने कमरे में बैठे थे, सागर भाइया अपने कमरे में 4 घंटों तक सोते रहे और मैं शतरंज खेल रहा था, 1 बजे के आसपास सभी लोग फ़र्स्ट हाफ़ में वापस आ गए, और खाना खाने के बाद वे वापस शूटिंग करने को चले गए, और हम 6 बजे तक अपने–अपने कमरों में पड़े रहे।

मैंने देखा सरकार के प्रति यहाँ के लोगों में काफ़ी नाराज़गी हैं, हुआ यह कि शिव सेना नामक पार्टी व भारतीय जनता पार्टी ने महाराष्ट्र में चुनाव जीतने के लिए गठबंधन बनाया था। भारतीय जनता पार्टी की लोकप्रियता ज़्यादा होने के कारण जनता ने इस गठबंधन को अपना सहयोग दिया। जीतने के बाद में शिव सेना ने चीफ मिनिस्टर की पदवी प्राप्त करने के लिए भारतीय जनता पार्टी को दबाव में ला दिया और आखिर में पदवी प्राप्त कर ली। फलस्वरूप यहाँ ग्रामीण इलाक़ों में कभी बिजली आती हैं कभी नहीं आती।

रात का खाना खाने के बाद जब हम वापस कमरे में जा रहे थे, तब मेरा चश्मा मेरे पास नहीं रखा था, और यह दूसरा चश्मा था जो कुबेर भइया ने दिया था, पहला चश्मा मुझसे पिछले गेस्ट हाउस में खो गया था, और भइया लोगों को दूसरे चश्मे की ख़बर मैं लगने नहीं देना चाहता था, मैं दौड़कर भोजन कक्ष में गया जहां मैंने अपना चश्मा आखिरि बार देखा था।

वहाँ मैंने कर्मचारियों से पूछा तो उन्होंने साफ़ इनकार कर दिया, उन्होंने कहा उन्होंने कोई चश्मा नहीं देखा, मैंने 2–3 जनों से और पूछा तो उन में से एक तो भड़क ही गया और अपने पुराने किससे सुनाने लगा, बताया की वे मंगल सूत्र और आइफ़ोन भी लौटा रखे हैं, मेरे चश्मे की क्या ही बिसात हैं।

अब था तो उसमें मराठी खून ही, जय शिवाजी का नारा लगा कर मेरे ऊपर चढ़ गया, मैं बहुत ही मुश्किल से उस से पीछा छुड़ा कर वहाँ से निकला, और कमरे के पास ही बने एक छोटे से ग्राउंड में जाकर चश्मा ढूँढने लगा, लेकिन चश्मा नहीं मिलौं। मैं चुपचाप जाकर कमरे में बैठ गया और हम सभी लोग लगभग 10 बजे के आस–पास सो गए, और हमारा आज का दिन ऐसे ख़त्म होता हैं।

9 मार्च, 2022

मेरे लिए सोने पर सुहागा हो गया

मेरा आज का दिन शुरू हुआ सुबह के 7 बजे, और आज का दिन मेरी ज़िंदगी कोई आम दिन नहीं हैं। जब तक मैं यात्रा कर रहा हूँ कोई भी दिन आम दिन नहीं हैं, और मेरी ज़िंदगी का अभी एक ही लक्ष्य था वह चश्मा ढूँढना हैं। अभी रोशनी हो गयी थी तो मैं फिर से कमरे के पास बने ग्राउंड पर गया, मैं उसी चश्मे को उसी आशा से ढूँढ रहा था जिस आशा से योगी जी उत्तर प्रदेश जीतना चाहते थे, और अचानक चश्मा मिल गया। मैं वापस कमरे में आया और अपने बैग में चश्मा डालने लगा और बोतल डालने वाली बैग की चैन में मैंने देखा की पुराना चश्मा पड़ा हुआ हैं। यह मेरे

लिए सोने पर सुहागा हो गया, इस बार मुझे वैसा ही लग रहा था जैसा मोदी जी को दूसरी बार भारत जीतने के बाद लगा होगा।

हम सभी लोगों को आज गेस्ट हाउस से लगभग 1 बजे निकले, हमें अगले 3 दिन में सिंगरौली पहुँचना हैं, अहमदनगर नगर से सिंगरौली से 23 घंटे की दूरी पर हैं, और तय हुआ था की एक दिन में 10 घंटे का सफ़र तय करना होगा और 12 तारीख़ तक सिंगरौली पहुँच जाएगें।

तो भइया लोग 2 बजे शूटिंग से आए और जल्दी–जल्दी सामान पैक कर के लगभग 3 बजे हम एक आख़री गाँव की शूटिंग के लिए चल दिए।

शूटिंग के दौरान मैंने पहली बार ग्रीन हाउस देखा, वहाँ ग्रीन हाउस में बैंगन, मिर्ची वा पुदीना उगे हुए देखा। अंदर जाने पर काफ़ी ज्यादा उमस होने लगा था, ग्रीन हाउस की यही ख़ासियत की वह कृत्रिम वातावरण बना देता हैं। बिजली की समस्या होने के कारण उस किसान ने अपने आप पौधों को पानी देने वाली मशीन बना रखी थी, और वह मशीन उस किसान के मोबाइल से चलती थी। महाराष्ट्र के किसानों को बिजली की समस्या होते हुए भी वे इतनी प्रगति कर रहे है, उसे देख कर मुझे दिल्ली के किसान आंदोलन की याद आ गयी।

गाँव से शूटिंग करने के बाद हम भेंट में मिले संतरे खाते हुए सिंगरौली की तरफ़ बढ़ रहे थे। रास्ते में शनि महाराज का मंदिर भी आता हैं, उसे वहाँ के आम लोग शनेश्वर जी के नाम से जानते हैं।

शनेश्वर जी की कहानी में एक बूढ़े किसान को भग़वान शनि सपने में दर्शन देते हैं की तालाब के पास एक शिला पड़ी हैं वह शिला भग़वान शनि की है, तो वह बूढ़ा किसान तालाब के पास गया और वह शिला ढूँढने लगा, और मिल भी गयी मगर किसान वह शिला उठा नहीं पाया। उसी रात उसे फिर सपना आया कि किस–किस व्यक्ति के पास जाकर किसान को, शिला उठाने में मदद लेनी है। बाद में वह शिला निकाली गयी और पास ही स्थापित की गयी। उस बूढ़े किसान की मूर्ति शनेश्वर भग़वान की मूर्ति के पास ही बनायी गयी है। पहले जब यह नयी–नयी शिला लगायी गयी थी तब आसपास रहने वाले लोग अपने घर में ताला नहीं लग़ाते थे।

शनेश्वर जी के भव्य दर्शन करने के बाद हम सभी नंदी की कमर पर लद गए, नंदी पर लगभग 50 किमी. सफ़र करने के बाद हमनें एक ढाबे की ठंडी ठंडी घास पर तम्बू गाड़ कर सोने के साथ दिन ख़त्म किया।

अखंड पत्थर से बना मंदिर परिसर, एलोरा, महाराष्ट्र

10 मार्च, 2022
एलोरा की गुफ़ाये

मेरा आज का दिन शुरू हुआ एलर्जी का असर दिखने के साथ, आज भी सूर्य भगवान मुझ से हार गए थे, अब तो आदत सी होने लगी हैं। आज हमें एलोरा की पहाड़ी में कैलाश मंदिर के दर्शन करने जाना था। मुझे एलोरा की पहाड़ी के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी, व किताबों में कई बार इसका ज़िक्र देख रखा था। सच कहा जाए तो आप जब तक भारत में बनी कलाकृतियों को देख नहीं लेंगे तब तक आपको उनके बारे में पढ़ने से कोई मज़ा नहीं आएगा।

आज का दिन बहुत ही ख़ास दिन था, पिछले वाले से बहुत ज्यादा ख़ास, आज उत्तर प्रदेश चुनावों के फल भी आने वाले थे, आज रोज़हब का जन्मदिन भी था, आज हमें एलोरा की पहाड़ी देखने भी जाना था और तो और तीसरा ज्योतिर्लिंग देखने भी जाना था और सिंगरौली तो कल तक पहुँचना ही था। हम सुबह–सुबह जल्दी से उठकर विश्व धरोहर एलोरा की गुफाओं को देखने चल दिए, वहाँ पहुँचकर हमने देखा एक बहुत ही बड़ी पहाड़ी को खोदकर भगवान शंकर का मंदिर बनाया गया हैं।

एलोरा की गुफाओं में यूँ तो 30 गुफ़ाएँ बनायी गयी हैं मगर देखने लायक़ 1, 2, 3, 16, 17 और 18 हैं। बाक़ी काफ़ी सारी मुग़लों द्वारा तोड़ दी गयी है, हमने अंदर घुसने से पहले एक साइन बोर्ड देखा जिसपर लिखा था दो शिल्पियों का नाम, जिनका एलोरा गुफाओं को बनाने में काफ़ी बड़ा सहयोग था। वहाँ लिखा था की यह गुफाएं के सातवीं शताब्दी आसपास बनायी गयी थी और इन दोनों गुफाओं को बनाने में लगभग 200 साल लग गए थे, पर यहा कि मूर्तियों को खंडित करने में मुग़लों को 3 साल लग गए।

अजंता व एलोरा की मूर्तियों की ख़ासियत केवल उनकी बनावट ही नहीं हैं, अजंता व एलोरा की मूर्तियों पर जो रंग किया गया था 1300 साल पहले, वो अभी तक लगा हुआ था। कुछ जगहों पर तो हमें पेंटिंग भी बनी हुई दिखी।

आप एलोरा की गुफाओं में गिनती के हिसाब से नहीं घूम सकते क्योंकि काफ़ी सारी गुफ़ाएँ तोड़ दी गायी है व काफ़ी सारी अधूरी बनी हैं। यहाँ कोई भी मूर्ति ऐसी नहीं है जिसे एक हफ़्ते या एक महीने में बनाया जा सके। काफ़ी सारी जैन धर्म सम्बंधित मूर्तियाँ भी है यहाँ पर।

कैलाश मंदिर को पहाड़ी को ऊपर से काट कर नीचे तक बनाया गया है, इस बात से आप अंदाज़ा लगा सकते हैं भगवान शिव के भक्तों में कितनी शक्ति हैं। 200 सालों तक एक ही आर्किटेक्चर पर काम करना साधारण काम है ही नहीं, अगर आपको यहाँ

की चित्रकारी की एक झलक दिख जाए तो आप पूरे मंदिर की चित्रकारी देखने के लिए तरस जाएँगे। एलोरा की गुफाओं की ख़ासियत उनकी मूर्तियाँ नहीं हैं, पहले लोग उस मंदिर की मूर्तियाँ देखने नहीं आते थे, वे मूर्तियों पर बनी चित्रकारी देखने आते थे।

एलोरा की मुख्य गुफा को देखने के बाद हमने पास ही बनी एक गुफा जिसके अंदर जाने से पहले वहाँ हमनें देखा वहाँ सीढ़ियाँ बनी हुई थी मगर टूट गयी थी। उस कारण उस गुफा की तरफ़ चढ़ना मुश्किल हो रहा था, जब हम उसके अंदर पहुँचे तो पता चला कि यहाँ भी भग़वान शिव की मूर्ति हैं, व पास ही एक जल कुंड बना हुआ हैं, उसमें पिछले साल की बारिश का पानी पड़ा था।

वहाँ से निकल कर हमनें पास ही बने एक ढाबे में खाना खाया। हमनें महाराष्ट्र के दो सबसे चर्चित पकवान खाए मिसल पाव और वड़ा पाव। इन दोनों ही पकवानों में काफ़ी ज्यादा मिर्ची डाली गयी थी। हम लोग नाश्ता कर ही रहे थे तभी पास ही की दुकान में मैंने एक भगवान बुद्ध की मार्बल की मूर्ति देखी, मुझे वह बहुत ही शानदार लगी, और मैंने ख़रीद भी ली।

हमें आज काफ़ी सफ़र करना था जब हम एलोरा के भव्य दर्शन करने के बाद नंदी की कमर पर जा कर बैठ गए, और 1 किलोमीटर की दूरी पर ही घृष्णेश्वर जी के ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने पहुँच गए। यहाँ ज्योतिर्लिंग में पुरुषों को सिर्फ़ लुंगी में घुसना होता हैं ज्योतिर्लिंग का नियम हैं, तो हम सभी लोग पास ही एक धर्मशाला में नहा धो कर लुंगी पहनकर चल दिए। यह मंदिर देवी अहिल्याबाई होलकर जो इंदौर की महारानी थी उनके द्वारा बनाया गया था।

मैंने ज्योतिर्लिंग के पास ही देखा की एक पुरानी इमारत बनी है, मैं उस इमारत को काफ़ी देर तक दूर से देखता रहा। बाद में सागर भइया से पूछकर उस इमारत के पास चला गया, उस इमारत के पास कोई भी व्यक्ति नहीं जा रहा था, ज्यादातर लोगों की यही धारणा थी कि वह एक मस्जिद है। मैं अपनी लुंगी संभालते हुए कैसे ही कर के उस इमारत के पास पहुँचा और काफ़ी देर की जाँच पड़ताल करने के बाद मुझे पता चला कि यह शिवाजी राजे के दादा जी की समाधि है। उस इमारत पर मैंने एक बड़ा सा कमल का फूल बना हुआ देखा इसलिए मुझे लगा ये मस्जिद नहीं हैं।

आज जब हम एक बजे के आसपास दर्शन करके वापस आ रहे थे तब पाँच राज्य गोआ, मणिपुर, उत्तरप्रदेश, पंजाब, केरल के चुनावों के फल निकलने वाले थे, रामकेश भइया को उत्तर प्रदेश के चुनाव के फल का इंतज़ार था, और उनके सब्र का फल मीठा ही आया।

मंदिर से काफ़ी दूर आने के बाद हमनें नर्मदा नदी की एक सहायक नदी देखी जिसका पानी मेरी शक्ल से ज़्यादा साफ़ था, हम लोगों ने नदी के पास जा कर नहाने का इरादा बनाया, वहाँ जाकर हम लोग पानी में कूद गए, और सिर्फ़ हम लोग अकेले नहीं थे लगभग 40–50 लोग और नहा रहे थे।

जब हम अमरावती के पास पहुँचे तब नीलेश भइया ने बताया कि हम उन्ही के किसी रिश्तेदार से मिलने जा रहे हैं। मैंने उस वक्त उनकी बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि मैं स्वीडन में रहने वाली एक लड़की का साक्षात्कार देख रहा था, जो संस्कृत भाषा में बड़े ही आराम बांते कर रही थी। उस साक्षात्कार को देख कर मुझे मेरे देश के प्रति गर्व और दुःख दोनों हो रहा था, गर्व इसलिए क्योंकि हमारे देश का इतिहास बड़े–बड़े ग्रंथों को इसी भाषा में लिखा है, व दुःख इसलिए क्योंकि भारत में लोग इस भाषा को सीखने के लिए जागरूक नहीं हैं।

उस लड़की ने बताया के स्वीडन में उसे संस्कृत सीखने वाला गुरु कोई मिला नहीं तो आखिरी में उसे भारत में आकर ही सीखना पड़ां। इसी लड़की की ही तरह बहुत पहले एक और चीनी व्यक्ति अपनी 60 वर्ष की उम्र तक भारत को ढूँढता रहा क्योंकि उसे एक ग्रंथ की तलाश थी जो चीन में मिलना बंद हो गया था। आखिर में जब उसे भारत भूमि मिली तो उसे पता चला वह ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा गया हैं, तो उसने पहले संस्कृत भाषा सीखी और फिर उस ग्रंथ को चीन ले गया।

साक्षात्कार ख़त्म होने के बाद रामकेश भइया ने बताया हम भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के बहुत बड़े ज्ञाता व शिक्षक से मिलने जा रहे हैं, उनका नाम हेमंत बोड़े हैं, वें कत्थक व ओडीसी दोनों सिखाते हैं।

रामकेश भइया उनके बारे में और जानकारी दे ही रहे थे कि हम अपने गंतव्य पर पहुँच गए, मैंने देखा हम उनके शिक्षा केंद्र पहुँच गये हैं। अंदर घुसने पर मैंने सबसे पहले बड़े बड़े सितार देखे, और सबसे शानदार पल तब था जब सितार वादन सिखाने वाले गुरुजी ने एक धागे के ज़ोर पर सितार के तारों के सुर बदल दिए।

रामकेश और सागर भइया गुरुजी से काफ़ी देर बातें कर रहे थे उसी दौरन उन्होंने गुरुजी का साक्षात्कार लिया गुरुजी ने बताया, जब आप एक एक कला को ग्रहण करते हैं तब उस कला का उपयोग करना व उसका विस्तार करना आपका कर्तव्य होता है। उन्होंने बताया उनके काफ़ी सारे छात्र अभी देश विदेशों में हैं व वहाँ से भी कला का विस्तार कर रहे हैं।

साक्षात्कार करने के बाद, हम सभी का खाना खाने का समय हो गया था और हमें यात्रा जारी भी रखनी थी। हम सभी जाने को हो ही रहे थे की गुरुजी के विद्यार्थियों

अत्याधुनिक कृषि विज्ञान की चर्चा, राहुरी, महाराष्ट्र

ने हमें बातों ही बातों में रोक लिया, और पास ही के आदर्श नाम के होटल में हमें ले जाकर खाना खिलाया। खाना बहुत अच्छा बना था, खाना खाते वक्त रामकेश भइया ने उन्हें मेरी किताब के बारे में बताया जो मैं सफ़र के दौरान लिख रहा हूँ, यह बात बोलकर रामकेश भइया नें मुझे और दबाव में डाल दिया था।

हेमंत जी से विदा ले के, लगभग 50 किमी. तक सफ़र करने के बाद हमनें एक ढाबे के पास अपना तम्बू गाड़ा व सो गए और हमारा आज का सफ़र ऐसे ही ख़त्म होता हैं।

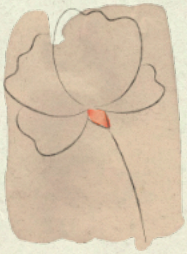

11 मार्च, 2022
साउंडप्रूफ़ हाइवे

मेरा आज का दिन मेरी चद्दर खींचे जाने के साथ ही शुरू हुआ, लगभग 5:30 बजे थे और भगवान दिनकर आज भी मुझ से हार गए थे, और 5 बार हार चखने के बाद उनका मुँह लाल सा दिखने लगा था, हम आज भी महाराष्ट्र में ही थे और ढाबे वाले को शुक्रिया व अलविदा कहने के बाद हम वापस सिंगरौली की तरफ़ बढ़ गए।

सिंगरौली जाने के रास्ते में बीच में नागपुर आता हैं, और न जाने कैसे हमारा रात का खाया हुआ खाना सुबह–सुबह पेट से ग़ायब हो जाता हैं, तो हमनें नागपुर में रुक कर नाश्ता करने का तय किया।

लगभग 10 बजे, हम एक ठेले के पास पहुँचे जो अपनी गली का काफ़ी मशहूर ठेला लग रहा था, क्योंकि उसके पास काफ़ी सारे लोग खड़े थे। वह ठेले वाला समोसे, डोसा, इडली व बड़े बेच रहा था, हमनें वहाँ इडली, डोसा और बड़े खाए। आज के सफ़र में मैंने देखा की महाराष्ट्र में खाना ज्यादा तीखा खाया जाता हैं मध्यप्रदेश व गुजरात की तुलना में। उस ठेले वाले ने तीखा मगर बहुत ही स्वादिष्ट नाश्ता बनाया था।

नाश्ता करने के बाद हम सभी फिर सिंगरौली की तरफ़ बढ़ गए और लगभग 2 घंटे सफ़र करने के बाद हम मध्यप्रदेश की सीमाओं में पहुँच गए। मध्यप्रदेश में घुसने से पहले हमसे टोल टैक्स लिया गया।

जैसे ही हम मध्यप्रदेश में घुसे घने जंगलों ने हमें घेर लिया, मध्य प्रदेश में भारत के सबसे बड़े जंगल पाए जाते हैं, और बहुत सारी नदियाँ व सहायक नदियाँ इन्ही जंगलो से होकर निकलती हैं।

यहाँ मैंने पहली बार साउंड प्रूफ़ हाइवे देखा, अपने सफ़र में मैं दूसरी बार एंजिनीरिंग का करिश्मा देख रहा था। यह हाइवे लगभग 20 किमी. लम्बे, और बनाने में बहुत ही महँगा था। इस हाईवे को इस तरह से बनाया गया है कि ट्रैफिक की आवाज से जंगली जानवर प्रभावित न हों, यह भारत सरकार द्वारा उठाया गया कदम बहुत ही समझदारी से लिया गया हैं, ताकि जंगल के जानवर न सड़कों की आवाज़ सुनें, न रोड के ऊपर चढ़ सकें।

साउंडप्रूफ़ हाइवे से बाहर निकलने के बाद, लम्बे–लम्बे पेड़ों ने हमें घेर लिया, हम एक बड़े सारे पहाड़ी इलाक़े में आ गए थे जिसके 100–100 फुट लम्बे पेड़ हमें घेर के खड़े थे, इतने सारे पेड़ एक साथ देखकर मुझे एक बार तो पेड़ बचाओ आंदोलन से विश्वास उठ गया, मैं जहां भी देख रहा था पेड़ ही पेड़ थे। कुछ देर आगे जाने के बाद हमनें नर्मदा नदी की एक सहयक नदी को देखा उसका पानी मेरी शक्ल से ज्यादा साफ़ था, रामकेश भइया ने बताया जिस नदी में जितनी ज्यादा काई होगी उतना ज्यादा पानी साफ़ होगा।

नदी को देखते ही हम सभी ने वहीं पर नहाने का मन बना लिया था, और हम सभी जाकर नदी में कूद गए। मेरे अलावा सभी लोग काफ़ी सारी नदियों में नहाए हुए थे, हम लोग नदी के ऊपर–ऊपर के 3 फ़िट के पानी में नहा रहे थे क्योंकि नदी के ज्यादा तह तक जाना माउंटेन ड्यू पीकर पहाड़ से कूदने जैसा था, ऊपर से मुझे तैरना और नहीं आता हैं। नदी में नहाने वाले सिर्फ़ हम अकेले नहीं थे हमारे अलवा कई सारे लोग नदी के किनारों पर नहा रहे थे, मुझे महसूस हुआ कि लोग नर्मदा परिक्रमा कैसे कर लेते हैं।

जब आप नर्मदा परिक्रमा करते हैं तो यात्रियों की रहने, खाने, सोने का ध्यान नदी व नदी के पास रहने वाले लोग करते हैं। अगर आप 6 महीने की नर्मदा परिक्रमा कर रहें हैं, तो आपको खाने व रहने की समस्या नहीं होगी क्योंकि जब आप सब कुछ छोड़ देते हैं तब आपको सब कुछ मिल जाता है, भगवान शंकर की तरह।

नदी में नहाने के बाद हम सभी को पता नहीं कैसे बहुत थकान होने लगी, और कुबेर भइया के आलवा सभी लोग गाड़ी में सो गए। और उठने पर हम एक ढाबे के आगे खड़े हुए थे, मैंने ढाबे में जाकर अपनी पसंद का पकवान पुलाव मँगवाया, और जब हम खाना खा रहे थे तब रामकेश भइया नें मुझे कहा, यात्रा में आपको हमेशा आपकी पसंद का खाना नहीं मिल सकता, यात्रा के दौरान आपको वो भी खाना पड़ सकता

हैं जो आपको नहीं पसंद। मैंने उनकी बात पर छोटी सी हाँ भर दी और भोजन का स्वाद उठाता रहा।

खाना खाने के बाद हम नंदी की कमर पर लद गए, और मध्यप्रदेश के घने जंगलों की गहराइयों में चले गए। हम सभी नें देखा की दो व्यक्ति नर्मदा परिक्रमा कर रहें हैं व रामकेश और कुबेर भइया तो उनकी फ़ोटो खींचने के लिए नंदी से उतर गए, फ़ोटो खींचने के बाद उन्होंने पूछा कि आप कितने समय की परिक्रमा कर रहें हो, और हर दिन कितना चलते हों?

वें दोनों व्यक्ति भगवा पहने हुए नंगे पाँव परिक्रमा कर रहे थे व उन्होंने बताया उन्होंने 3 साल 3 महीने 3 दिन की प्रतिज्ञा ली हैं व हर दिन 7 से 10 किमी. सफ़र करते हैं। थोड़ी दूर चलने के बाद हमें लगभग 200 गायों का एक झुंड दिखा, मैंने इतनी सारी गाय पहली बार देखी थी, वें सभी गाय देखने में बहुत पतली थी व उन्हें चराने वाले ग्वाले ने बताया कि वें सभी गायें एक जगह पहुँचने के बाद अपने–अपने घर खुद ही चली जाएँगी, उसने बताया कि हर एक गाय आधा लीटर दूध ही देती हैं, यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि मेरे यहाँ एक गाय लगभग 5 लीटर दूध देती हैं।

हम लोग जंगल में ही काफ़ी देर से सफ़र कर रहे थे, सफ़र करते–करते अंधेरा हो गया था, और हमें अभी तक भूख भी लग गयी। हम जंगल में आगे बढ़ते ही जा रहे थे मगर कही भी शहरी इलाक़ा नहीं दिख रहा था, काफ़ी देर बाद लगभग रात को 11 बजे के आसपास हमें एक बहुत ही छोटा सा ढाबा दिखा जिसका मालिक बड़े दिल वाला था। उसकी दुकान बंद करने का वक्त था मगर उसने सफ़ाई का काम रोक कर पहले हमें खाना खिलाने का निर्णय लिया और मुफ़्त में रुकने का अनुमति भी दे दी।

मगर मेरे लिए समस्या थी की उनके यहाँ सिर्फ़ अण्डा बचा था और कोई भी खाने का साधन न था, मैं अण्डा खाना नहीं चाहता था मगर मुझे खाना पड़ा क्योंकि मुझे बहुत ज़ोर से भूख लगी थी, और तब मुझे रामकेश भइया की बात की अहमियत समझ में आयी, यह एक सयोंग ही था, खाना खाने के बाद हम सभी नें ढाबे के अंदर ही अपना बिस्तर बिछाया और सो गए, और हमारा आज का सफ़र ऐसे ही ख़त्म होता हैं।

कोल हँडेलिंग प्लांट, एन० सी० एल०, सिंगरौली, मध्य प्रदेश

12 मार्च, 2022
सिंगरौली का सफ़र

मेरा आज का दिन शुरू हुआ जंगल के एकदम बीचों–बीच एक छोटे से ढाबे के अंदर, और मुझे लगता हैं कि इतनी ज्यादा हार झेलने के बाद सूर्य भगवान अब थोड़े तेज़ हो गए थे मगर फिर भी मुझे नहीं हरा पाए। मेरी नींद आज सुबह 6 बजे खुली, आज हम सिंगरौली से 5 घंटे की दूरी पर थे।

सिंगरौली उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश के बॉर्डर के पास आता है, हमें सिंगरौली एक सेमिनार की शूटिंग, और लाइव स्ट्रीम करने जा रहे हैं, सिंगरौली को भारत की ऊर्जा का केंद्र भी कहा जाता हैं। यहाँ भारत सरकार की कम्पनी एन०सी०एल० हर साल लगभग 125 मिलियन टन कोयले को धरती से खोदकर निकालती हैं, कम–से–कम अगले 20 साल तक यह खुदाई चलती रहेगी।

सिंगरौली तक पहुँचते हुए मैंने बहुत सारे पेड़ देखें, ये सारा जंगल विंध्याचल पहाड़ियों में आता हैं। यहाँ लम्बे लम्बे पेड़ हैं जो लगभग 6 महीने हरे व 6 महीने सूखे रहते हैं, यहाँ के लोग इस जगह के हिसाब से अपना घर खुद ही बनाते हैं व बहुत ही सुंदर बनाते हैं। यहाँ के लोगों के लिए बसंत में आसमान से सोना टपकता है, सोने से मेरा तात्पर्य है महुआ नामक एक फल से जो यहाँ सबसे ज्यादा पाया जाता हैं, व बहुत मीठा होता हैं। यहाँ के लोग महुआ को खाते भी हैं, बेचते भी हैं, व उसकी देशी शराब भी बनाते हैं। यहाँ के घरों पर फूल बनाए गए हैं जो मेरे हिसाब से महुए के फूल को चित्र के रूप में बनाया गया हैं, बाहर के शहरी लोग इन सभी आदिवासियों के छोटे घर देखकर उन्हें ग़रीब कहते हैं।

हम बसंत के मौसम में जंगल के अंदर आए थे, पेड़ हरे–हरे थे और ठंडी हवा के साथ झूम रहे थे जैसे उन्हें योगी जी के उत्तर प्रदेश जीतने पर खुशी हो रही हों। मैंने मध्यप्रदेश में सोन, गोपद, नर्मदा व बनास नदी देखी, रामकेश भइया नें बताया कि इस जंगल में सफ़ेद और आम दोनों तरह के बाघ दिखते हैं मगर बहुत मुश्किल से।

यहाँ की फ़ॉरेस्ट पुलिस बहुत तेज़ व बहुत ही कड़क हैं, उन्होंने पूरे जंगल की सड़कों के आसपास पत्थर लगा रखे हैं व उस पत्थर को पार करने पर जुर्माना लग सकता हैं, और अगर पेड़ों को नुक़सान पहुँचाया जाएगा तो कार्यवाही की जाएगी।

हम काफ़ी देर तक जंगल से गुज़रते रहे मगर ख़त्म ही नहीं हो रहा था, आखिरकार 3 घंटों के सफ़र के बाद हम सिंगरौली के शहरी इलाक़े में पहुँचे। वहाँ की 8 किमी. तक सड़क टूटी हुई थी, हुआ यह कि रोड को बनाने वाले पिछले ठेकेदार ने काम

को किसी लीगल कारण से अधूरा ही छोड़ दिया था। व 2008 के बाद अभी तक वह सड़क ठीक नहीं हुई, इसी कारण हमारा नंदी बहुत गंदा हो गया।

जब हम थोड़े और गेस्ट हाउस के पास पहुँचे तब मुझे मिट्टी के बड़े–बड़े पहाड़ दिखे जो की मानव निर्मित थे, और उन के पास मुझे कोयले के 100–100 फुट ऊँचे पहाड़ दिखे जिसे नीलेश भइया छोटा बोल रहे थे। और आखिरकार 22 घंटे के सफ़र के बाद गेस्ट हाउस पहुँच गए थे, वहाँ से भी हमें कृत्रिम पहाड़ दिख रहे थे।

जब हम आपने कमरे में पहुँचे तो इस कहानी में अपने आप एक नया किरदार जुड़ गया जो पहले से हमारे कमरे में बैठा था उसका नाम पुष्पेन्द्र पटेल है व अगले पन्नों में हम उसे पुष्पा के नाम से सम्बोधित करेंगे, दरसल हमने पुष्पा जी को इसलिए बुलाया था ताकि हम सेमिनार में ज्यादा लोगों के सहयोग से शूट कर सकें व पुष्पा जी भी एक प्रफ़ेशनल फ़ोटोग्राफ़र हैं।

दोपहर का खाना खाने के बाद हमनें गेस्ट हाउस में अपना बचा हुआ दिन थकान निकालने में बिता दिया, और ऐसे ही हमारा आज का दिन ख़त्म होता हैं।

13 मार्च, 2022
फुट्बॉल व कैमरा

मेरा आज का दिन काफ़ी जल्दी शुरू हुआ, मगर इतने दिनों की कोशिश के बाद सूर्य भगवान आज मुझसे जीत गए, लेकिन मुझे आज की हार का कोई दुःख नहीं था, मैं आज लगभग 7 बजे उठ गया व मैंने देखा सब लोग जल्दी में हैं उन सभी को देख कर मुझे याद आया की आज एन०सी०एल० का सेमिनार हैं लगभग सुबह–सुबह 9 बजे के आसपास हम सभी नाश्ता करने के बाद सेमिनार की तरफ़ चल दिए।

9:30 ही बजे होंगे मगर पता नहीं क्यों सूर्य भगवान बड़ी तेज़ गर्मी बरसा रहे थे, मुझे कुछ भी अंदाज़ा नहीं था कि सेमिनार में इतना बड़ा सेट–अप लगा होगा, मैंने देखा 12 फ़ीट लम्बी व 15 फ़ीट चौड़ी स्क्रीन वहाँ लगी हुई हैं।

जब मैं छोटा था तो मुझे फुट्बॉल के मैच देखना बहुत पसंद था। जब एक खिलाड़ी बहुत ही तेज़ी से फुटबोल को अपने साथ ले जाता था, तो अचानक से कैमरे का

ऐंगल बदल जाता था, मुझे समझ नहीं आता था की टीवी वालों ने यह किया कैसे, क्या उन्होंने कैमरे को फेंक कर किसी दूसरे व्यक्ति को दे दिया? या उन्होंने कोई डिवाइस फेंक कर दूसरे कैमरा होल्डर को दिया? आज मुझे उस सवाल का जवाब मिल गया था।

मैंने देखा भइया लोगों ने कैमरो को अलग–अलग जगह स्टैंड में लगा रखा हैं, व एक कैमरा कुबेर भइया के हाँथ में था, और वें सभी कैमरा तार या वायरलेस के माध्यम से एक कम्प्यूटर से कनेक्ट हो रखे थे। उस कम्प्यूटर को रामकेश भइया सम्हाल रहे थे, और पूरे सेमिनार में जब भी कोई व्यक्ति माइक लेकर बोलता था, तब रामकेश भइया उसकी तरफ़ जिस कैमरा का ऐंगल सेट होता था, उसे ऐक्टिव कर देते थे। और अगर किसी भी कैमरा का ऐंगल उस व्यक्ति की तरफ़ नहीं हैं तो नीलेश भइया के हाँथ में जो कैमरा हैं, उसे ऐक्टिव कर दिया जाता हैं, और जब भी कोई कैमरा ऐक्टिव होता हैं तो उस बड़ी सी स्क्रीन पर उसका व्यू दिखता हैं।

मेरे ख़याल से अब आपको समझ आ गया होगा। तो सेमिनार शुरू हुआ लगभग 11 बजे, एन०सी०एल० के सभी बड़े–बड़े अधिकारी वहाँ मौजूद थे व उन्हें स्टेज पर आकर स्पीच देनी थी, की उन्होंने इतने सालों में कम्पनी को क्या–क्या फ़ायदा हुआ हैं उनके कारण। ये सेमिनार 11 बजे से शाम को 8 बजे तक चलने वाला था, मैं सेमिनार का वक्त सुनकर ही भौचक्का रह गया, क्योंकि इतनी देर तक ख़ाली बैठे रहना मेरे लिए बॉलीवुड की फ़िल्में देखनें जितना बुरा था, मगर मुझे बैठना पड़ा।

लगभग 2 बजे के आसपास खाने का समय हो गया था, और मैं इसी चीज़ का बहुत देर से इंतज़ार कर रहा था, मैं भोजन कक्ष में गया और पनीर की सब्ज़ी, पूड़ी व चावल खाने के साथ ही अपने शरीर के मध्यप्रदेश की भूख को शांत कर दिया।

इसके बाद लगभग शाम के 8 बजे हम लोगों को छुटकारा मिला, व सभी भइया लोग दिन भर की थकान निकालने के लिए, कमरे में जाते ही बिस्तरों पर गिर गए, और ऐसे हमारा आज का दिन ख़त्म होता हैं।

14 मार्च, 2022
नंदी, बैल या गाड़ी?

मेरा आज का दिन शुरू हुआ 7:30 बजे, और मेरी आँख खुली पंखे की ठंडी हवा के साथ। मैंने चद्दर ओढ़ रखी थी मगर फिर भी पंखा पता नहीं कैसे ठंडी हवा में ए०सी० को भी गच्चा दे रहा था, इसी चक्कर में मुझे जुखाम लग गया। थोड़ी देर बाद मैंने

एन०सी०एल० का सेमिनार, सिंगरौली, मध्य प्रदेश

हमारे गेस्ट हाउस के पास बने एक बास्केटबॉल कोर्ट में अंकलों का गेम चलता हुआ देखा, और मैं जल्दी से जूते पहन कर कोर्ट की तरफ़ भागा। मैं जब तक पहुँचा गेम ख़त्म होने ही वाला था, और मैं पास ही खड़ा देखता रहा। वें लोग बहुत अच्छा खेल रहे थे, मेरे ख्याल से वें सभी अंकल पहले काफ़ी अच्छे खिलाड़ी रह चुके थे।

मुझे दुःख हुआ की मैं उनके साथ नहीं खेल पाया, एन०सी०एल० में खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए वहाँ के प्रशासन ने बहुत अच्छी सुविधा बना रखी है, वहाँ बास्केटबाल, टेनिस व बैड्मिंटन के बहुत अच्छे कोर्ट बनाए गए हैं।

आपने मेरे लेखों में अभी तक नंदी शब्द बहुत बार सुन लिया होगा, और मेरे ख्याल से आपको पता भी चल गया होगा नंदी कौन हैं! अगर नहीं पता चला हैं तो आपको बता दूँ कि, नंदी एक बैल जितना बड़ा ट्रैव्लर कार हैं, इसकी कम्पनी का नाम रेनॉल्ट है व ट्राईवर इसका माडल है, यह अब तक 60,000 किमी. चल चुका हैं, हम अपने सफ़र में बीकानेर से छत्तरपुर तक लगभग 7,200 किमी. सफ़र कर चुके हैं। हालाँकि इसमें 7 लोग बैठ सकते हैं मगर भइया लोगों ने इसकी पीछे की सीटें हटा दीं ताकि सामान रख सकें।

नंदी की पीठ पर हम बहुत सारा सामान लादकर चल रहे हैं, जैसे एक बड़ा सा तम्बू, 5 स्लीपिंग बैग, सभी के कपड़े, खाना पकाने की व्यवस्था, काफ़ी सारा शूटिंग का सामान, दो ड्रोन, कई ऐपल के एर बुक्स और आइपेड आदि। जब हम एकता नगर के मॉल में गए थे तब हमनें नंदी के लिए एक घंटी भी ख़रीदी थी, जब भी नंदी किसी गड्ढे के ऊपर से या ऊबड़–खाबड़ रास्ते से जाता है तब ये घंटी बजने लगती हैं। नंदी अभी तक 15 राज्यों व 150 से ज्यादा ज़िलों में घूम चुकी हैं व अभी तक सात बहनों व दक्षिण की तरफ़ नहीं गया है।

मैंने आज नंदी के बारे में बताने का इसलिए सोचा क्योंकि आज के दिन मैं, सागर भइया और पुष्पा भइया तीनों ही बाहर नहीं गए, बाक़ी सभी लोग कार्यालय की तरफ़ चले गए थे।

व आज का हमारा दिन कुछ ख़ास नहीं गया था, सिवाय तब जब हमनें आलू के पराठे खाए। हमारा आज इस गेस्ट हाउस में आखिरी दिन था क्योंकि हम कल यहाँ से निकलने वाले थे। यहाँ से निकलकर हमें छत्तरपुर पहुँचना था जो सिंगरौली से 8 घंटे की दूरी पर है। 10 बजे के आसपास हम सभी लोग सो गए, व हमारा आज का दिन ऐसे ही ख़त्म होता हैं।

15 मार्च, 2022
पेट या कुँआ?

मेरा आज का दिन शुरू हुआ, सूर्य के साथ–साथ और सच बताया जाए तो मैंने कल सोने से पहले सोच लिया था की सूर्य भगवान को हराना हैं, लगता हैं मेरी सुबह उठने की खूबियों में जंग लग गई थी, फिर भी मैं कैसे भी कर के 7 बजे उठा।

मुझे आपने 16 वर्षीय जीवन में आज तक एक बात कभी समझ नहीं आयी, की रात को खाया हुआ सुबह–सुबह कहाँ ग़ायब हो जाता हैं? इस सवाल का जवाब हम कह सकते हैं कि रात को वक्त के अंतराल के साथ ही खाना पच जाता हैं। हम सभी को सुबह उठने के थोड़ी देर बाद ही भूख लग गयी थी व 9 बजे के आसपास हम सभी ने फ़ैमिली हॉस्टल में जाकर खाना खाया। इस बार हमनें आलू की सब्ज़ी व मोटे–मोटे व गर्मा–गर्म पराठे खाए खाकर मज़ा ही आ गया।

भइया लोगों ने तय किया था की आज 10 बजे तक सामान पैक कर के निकल लेंगे, आज का सफ़र काफ़ी लम्बा होने वाला था, क्योंकि हमें 8 घंटे तक सफ़र करना था। खाने की माया में हम सभी लोग ऐसे डूबे–ऐसे डूबे के वापस गेस्ट हाउस पहुँचने में ही 12 बज गए, फिर जैसे तैसे हम सभी लोगों ने 1 बजे तक सामान पैक किया और निकल लिए।

हमने अपना आज सफ़र कड़ी धूप में शुरू किया था, और कार की खिड़की खोलने पर और ज्यादा गर्म हवा लगने लग जाती, तो आखिर में ए०सी० चालू किया गया। मुझे मध्यप्रदेश व राजस्थान की गर्मी एक जैसी लगी, गर्मा–गर्म व एकदम सूखी। बस अंतर इतना हैं कि यहाँ पेड़ बहुत ज्यादा हैं, व इतने ज्यादा पेड़ होने के कारण यहाँ पशु–पक्षियों की संख्या भी ज्यादा हैं। यहाँ मैंने देखा पेडों में दो–दो रंग होते हैं, मेरे ख़्याल से पेड़ों का पहला रंग पुरानी पत्तियों का होगा व दूसरा नयी पत्तियों का, या पेड़ में लगे फूलों का होगा। ऐसे पेड़ मध्यप्रदेश में हर जगह हैं, व आप जहां भी जाएँगे आपको लगेगा आपका स्वागत कर रहें हों।

बसंत के मौसम में वृक्ष का हर एक पत्ता झूम रहा होता हैं, जैसे वो अपने जन्म का आनंद मना रहा हो। पेड़ों को तो मानो, जानवरों–व–मनुष्यों को अपना फल खिलाने

में आनंद आ रहा हों। हर एक फसल अपने–अपने एक–एक कण के साथ मानो बसंत की हवा में झूमने की कोशिश कर रही हो। महुए का पेड़ अपने फल–फूलों से आम को गच्चा देना शुरू कर देता हैं, व यहाँ के आम लोगों का कहना हैं की महुए की देशी शराब अंग्रेज़ी दारू से कहीं ज्यादा अच्छी होती हैं।

गाड़ी में कड़ी दोपहर में सफ़र करते–करते हम सभी को नींद आ गयी थी, कहा जाता हैं की अगर आप सड़कों की सहायता से दो–तीन दिन का सफ़र कर रहें हैं, तो यात्रा का बहुत ही कम हिस्सा दोपहर में पूरा होगा।

शाम को मध्यप्रदेश के घने पेड़ों के बीच से, ठंडी–ठंडी ताज़ी हवा लेते हुए हम फिर से एक टाइगर फ़ॉरेस्ट रेंज (पन्ना) में आ गए थे, इस बार बाघ दिखने की संभावना गुजरात के शेर दिखने से भी कम थी, 500 वर्ग किमी. में फैले इस टाइगर रेंज में सिर्फ़ 50 से 60 टाइगर है।

यहाँ की जंगल की पुलिस बहुत तेज़ हैं अगर आप जंगल में मार्क की गयी जगह से आगे जाते हैं तो आप काफ़ी मुश्किल में पड़ सकते हैं, जंगल के पास कितनी भी गुफ़ाएँ व अच्छी–अच्छी प्राकृतिक चीजें दिख रही हों आपको अंदर जाना मना हैं।

रात तक हम सभी लोग छत्तरपुर पहुँच गए, लगभग 12 बजे थे व हम रामकेश भइया के घर पहुँच गए। रात–व–घोर अंधेरा होने के कारण मुझे घर के दर्शन ढंग से नहीं हुए मगर एक मधुमक्खी का छत्ता ज़रूर दिखा, बाहर के मेन दरवाज़े के पास। अंदर जाते वक्त शेरू नामक पालतू कुत्ता मुझे देखकर भौंकने लगा, अचानक से उसकी आवाज़ सुनकर मैं भी एक बारी को डर गया था। बाद में रामकेश भइया ने शेरू को शांत कर के मुझे मेरा बिस्तर दिखाया जो की मच्छरदानी से ढका हुआ था। मुझे उस पर लेटते ही नींद की बजाय छींके आने लगे मगर आधे घंटे बाद जब मेरी धूल की एलर्जी शांत हुई तब कहीं जाकर मुझे नींद आयी, और हमारा आज का दिन ऐसे ख़त्म होता हैं।

16 मार्च, 2022
जुख़ाम या याद?

मेरा आज का दिन शुरू हुआ किसी के डाँटने की आवाज़ के साथ। जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा की रामकेश भइया के पापा, एक आदर्श नामक बंदर जैसे बच्चे को उठा रहे हैं जो की काफ़ी बदमाश बच्चा है।

रामकेश भइया का घर, छत्तरपुर, मध्य प्रदेश

सबसे पहले मैं आपको बता दूं कि इस घर में और कौन–कौन रहता हैं। यहाँ रामकेश, कुबेर व बाबूलाल भइया रहते हैं। रामकेश व बाबूलाल भइया की शादी हो चुकी हैं और दादा–दादी जी व 4 छोटे बच्चे भी हैं, आदर्श, शुभी, शारदा व शंकर। शुभी और आदर्श बबलू भइया के बच्चे हैं व शारदा और शंकर रामकेश भइया के बच्चे हैं। शारदा 1 साल की हैं, शंकर 3 महीने का, शुभी 4 साल की, व आदर्श 8 साल का हैं। यहाँ 2 कुत्ते, एक भैंस व एक गाय रहती हैं, गाय का नाम रजनी व भैंस का नाम खोड़ी है। मैं यहाँ थोड़े दिन ठहरूँगा।

सुबह–सुबह उठते ही मेरी एलर्जी भी शुरू हो गयी थी, और बहुत देर तक मैं उससे जूझता रहा व यह भी एक कारण था जिस से मेरा दिन दुखदायी रहा। तेज जुकाम के कारण मैं अनमना महसूस कर रहा था। मगर मेरे आसपास का माहौल एकदम शांत था, ऐसा लग रहा था जैसे सभी लोग मुझे बड़े अच्छे से जानते हैं। मैंने देखा कि घर के आसपास टमाटर का खेत हैं, गाय–भैंस के चारे का खेत हैं, बहुत सारे पपीते व केले के पेड़ हैं। यह सब देखकर मेरी तो लार टपकाने लगी, मैंने कभी इतने सारे फल–फूल एक साथ लगे नहीं देखे थे।

कहने का तात्पर्य हैं कि अगर आप घर के बीचों बीच से देखेंगे तो घर के आगे फूल लगे हैं, पीछे देखेंगे तो खेत हैं, बायें देखेंगे तो जामुन व पपीते का पेड़ हैं, दायें देखेंगे तो काफ़ी सारी फसलें, व हर घंटे में एक बार ट्रेन के दर्शन जरूँर होंगे।

मध्यप्रदेश में मुझे 3 बातें बहुत शानदार लगी, पहली यहाँ के लोग पेड़ों को नुक़सान नहीं पहुँचाते,। दूसरी गाय–भैंस हर घर में हैं व आपको मध्यप्रदेश के गावों में बहुत सारी गाय–भैंसें पाली जाती हैं। तीसरी जिस भी खेत में जाकर जितना भी फल–फूल खाना हैं खाओ कोई मनाही नहीं।

घर में लगभग सभी लोग अपनी भूमिका बहुत शानदार तरीक़े से निभाते हैं, रामकेश भइया के पिताजी जो पुलिस विभाग में कार्यरत है, उसी गावँ के चौधरी की तरह हैं जिसकी मूँछ का बाल पूरे गाँव में चलता हैं। बबलू भइया फ़ौज में हैं, व कुबेर और रामकेश भइया को तो आप जानते ही हैं। दादी जी अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम रखने वाली रानी से कम नहीं हैं, व उनकी दोनों बहुएँ उनके घुटने के नीचे ही रहती हैं, आदर्श के बारे में आप जान ही चुके हैं।

अब बारी आती हैं यहाँ के जानवरों की, रजनी नामक गाय 6 फुट लम्बी होने के बावजूद डंडे से डरती हैं, व खोड़ी बहुत ही शांत प्राणी हैं। विल्लू नामक कुत्ता अपने बुढ़ापे को वैसे ही बिता रहा हैं जैसे गाँव में बरगद के नीचे बैठकर हुक्का पीने वाले चच्चा बिताते हैं, व दूसरा कुत्ता शेरु अपनी जवानी का आनंद उठा रहा है, व बाक़ी सारे बछड़ा–बछड़ि व बिल्लियाँ फ़िल्मों के साइड कलाकारों की तरह हैं।

आज शाम को जब मैं बैंगन–आलू की सब्ज़ी, रोटी व दाल खाकर आँगन की तरफ़ जा रहा था तब भइया लोगों से मिलने के लिए एक 50 वर्षीय व्यक्ति आये थे, जिनका नाम कोशलेंद्र शर्मा हैं। वें यूँ तो दादा दादी जी के यहाँ दूध लेने आते हैं मगर खूब गप मार कर भी जाते हैं, कहानी में आगे उन्हें सर के नाम से सम्बोधित किया जाएगा, तो कोशलेंद्र जी छतरपुर में अंग्रेज़ी पढ़ाने की कोचिंग चलाते है। आजकल वह छोटे बच्चों के साथ जंगल रोड के आसपास वाहनों से फेंके गए कचरे को साफ कर रहे हैं। साथ–साथ बच्चों को वनों के बारे में भी पढ़ाते हैं और अभी तक लगभग 10 किमी. जंगल की सफ़ाई कर चुके हैं।

और आज का दिन मैंने सभी के व्यवहार और किताब पढ़ने में बिता दिया।

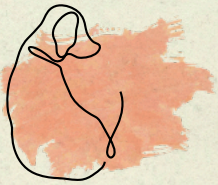

17 मार्च, 2022

खजुराहो दर्शन

मेरा आज का दिन शुरू होता हैं विल्लू के पेट के नीचे से अपनी टांगो को निकालने के साथ, दरसल मुझे कल बिल्लू के साथ सुलाया गया था। मुझे भी कुत्ते पसंद हैं इसलिए मुझे कोई समस्या नहीं थी, बिल्लू बेचारा कुछ नुक़सान पहुँचता ही नहीं, उसके ऊपर टांग रखें तो खुश ना रखें तो भी खुश, एकदम मेरे जैसा। जो भी हो मैं आज सूर्य भगवान से पहले उठ गया था, मगर सभी लोग मुझसे पहले उठ गए थे बिल्लू के अलावा।

सुबह –सुबह आज फिर मुझे एलर्जी ने आ घेरा, मैंने कई बार अपनी छींके रोकने की कोशिश की मगर अतः मेरी साँस उठने लग जाती थी। मैंने देखा कि आदर्श को उठाकर पढ़ने बैठा दिया गया हैं, और ऊँघते–ऊँघते वो अपना काम कर रहा है, उसे अपना सारा होम्वर्क 1 घंटे में पूरा करना था। तब तक मैं और सचिन घर के पास ही बने रेल मार्ग के आसपास घूमने चल दिए, आपको मैं सचिन के बारे में बताना भूल गया था, आपको बता दूं सचिन उन्हीं लोगों में आता हैं जिन्हें चढ़ती नहीं, इस बात से आप उसके चरित्र के बारे में पता लगा सकते हैं।

मुझे रामकेश भइया के घर अगले 2 दिन और मेहमान बनकर रहना था, उसके बाद वो मुझे ट्रेन चढ़ा कर बीकानेर भेज देंगे और और ट्रेन चढ़ने के साथ ही यह सफ़र

ख़त्म हो जाएगा। भइया लोगों का बनारस जाकर आइ०आइ०टी०–बी०एच०यू० के बच्चों के साथ ले कर आगे के टूर पर जाने का प्लान था तो सही, मगर सुनिश्चित नहीं था। ट्रेन मुझे 21 तारीख़ को चढ़नी हैं, साथ–ही साथ आज होलिका दहन भी हैं, मुझे याद है राजस्थान में जब भी होलिका दहन होता हैं तब उसकी तैयारी दो दिन पहले शुरू हो जाती हैं मगर यहाँ मैंने होलिका दहन का कोई लोगों पर ख़ास प्रभाव नहीं देखा।

मेरे ख़्याल से जब आप गाँव में होते हो तब आपके पास समय की कोई कमी नहीं होती व समय भी तेज़ी से नहीं बीतता व आपको जितने फल खाने हैं खा सकते हैं, आप मध्यप्रदेश के गाँवों को छोटा स्वर्ग कह सकते हैं।

आज दोपहर में कोशलेंद्र जी रामकेश और सागर भइया को साथ लेकर केन नदी और खजुराहो जा रहे थे व इसी बहाने मुझे भी साथ ले लिया। हम सभी नंदी में बैठ गए, अभी दोपहर थी इसलिए मैंने नंदी के कानों के पास जाकर उसे ए०सी० चालू करने को कहा, मेरी इच्छा अनुसार नंदी ने ठंडी–ठंडी हवा निकालनी शुरू कर दी। आपको बता दूं कि मैं जब भी नंदी को ए०सी० चालू करने को बोलता हूँ तब नंदी हर बार एक ही समस्या सामने रख देता हैं की अगर वह ठंडी हवा निकालेगा तो उसे जुगाली ज़्यादा व जल्दी करनी पड़ेगी, और अगर जल्दी करनी पड़ेगी तो उसका पेट जल्दी ख़ाली होगा, फिर भी काफ़ी बार दोपहर के समय हमें ए०सी० चालू करना ही पड़ता हैं।

कोशलेंद्र जी अपने साथ एक और व्यक्ति को लाए थे जिनका नाम दिलीप था, वे एक होटल की मैनज्मेंट से जुड़े थे। हम सभी उनके होटल में चाय पीने के बाद जंगल सफ़ारी की तरफ़ चल दिए। मैंने रास्ते में देखा कि बच्चे पेड़ों से फल तोड़कर खा रहें हैं, मैंने आसपास देखा तेंदू के पेड़ काफ़ी ज्यादा थे, और पेड़ों पर काफ़ी सारे मधुमक्खी के छत्ते थे। मुझे याद आया, 3 तो दादा–दादी जी के घर के गेट के वाले पेड़ पर ही हैं, आपको बता दूँ तेंदू के पत्तों से ही बीड़ी का खोल बनता है।

काफ़ी आगे निकलने के बाद हम एक तालाब के पास पहुँचे, वह तालाब लगभग 400 साल पुराना होगा व अभी भी काफ़ी साफ़ था। दोपहर में तालाब से आने वाले ठंडी हवाओं के झोंके हमें वहाँ काफ़ी देर तक बैठने के लिए मजबूर कर रहे थे। रामकेश भइया ने बताया कि यहाँ पहले बारातें रात भर या फिर दोपहर में विश्राम करती थी व तालाब उन्हें नहाने, धोने, पीने व खाना पकाने सभी की सुविधा प्रदान करता था, आज कल तो मध्यप्रदेश में बारातें कारों पर ही निकलती हैं।

तालाब के पास लगभग आधे घंटे बैठने के बाद, दिलीप जी को वापस होटल पहुँचा कर हम केन नदी की तरफ़ चल दिए। यह नदी भी मेरे मुँह से ज़्यादा साफ़ थीं, हम

ओडीसी नृत्यांगनाऐं, खजुराहो, मध्य प्रदेश

सभी नदी देखते ही कूद गए और लगभग आधे घंटे तक नदी का आनंद; उसमें सुअरों की तरह पड़े–पड़े लिया। जब हम नहा रहे थे तब 8–9 साल के छोटे–छोटे बच्चे नंग–धड़ंग होकर नदी में कूद गए और लगातार कूद ही रहे थे। नीचे बड़े–बड़े पत्थर उनको नुक़सान पहुँचा सकते थे मगर पता नहीं कैसे, उन्हें लगी एक बार भी नहीं, मेरे ख़्याल से उन्हें आदत हो गयी थी।

केन नदी में स्नान करने के बाद हम खजुराहो की तरफ़ चल दिए, खजुराहो के सभी मंदिर विश्व भर के यात्रियों के लिए बहुत ही ख़ास हैं। यहाँ के सभी मंदिर अलग–अलग समय में बनाए गए हैं, शायद सबसे पहला मंदिर – लक्ष्मण मंदिर है। यह एक भगवान बिष्णु का मंदिर है, उनके मंदिर के सामने ही भगवान विष्णु के वराह अवतार की मूर्ति बनी हुई थी जिन्होंने माता पृथ्वी को उठा लिया था। मैंने पास जाकर देखा तो पता चला की उनकी पूरी पत्थर की मूर्ति पर काफ़ी सारी नक्काशी की गयी हैं और हर एक नक्काशी में एक ही देवता हैं। भगवान वराह की मूर्ति के नाक के पास ही एक और स्त्री की मूर्ति थी, मगर वह टूट गयी थी, मुझे लग रहा था की वह माता पृथ्वी की मूर्ति हैं।

भगवान वराह के भव्य दर्शन करने के बाद मैंने लक्ष्मण मंदिर को देखा उसमें भी बहुत ग़ज़ब काम किया गया था, और वह मंदिर अभी भी चिकना था। खजुराहो को पश्चिमी समूह में कुल छह बड़े–बड़े मंदिर बनाए गए हैं। हम लोग केन नदी में स्नान करने के बाद लगभग 5 बजे मंदिरों पास पहुँचे थे, और सूर्यास्त होने से पहले–पहले ही मंदिरों को बंद कर दिया जाता हैं, इसलिए मैं सिर्फ़ 4 ही मंदिरों के दर्शन कर पाया। बाक़ी बचे थे नंदी व जगदंबा माता का मंदिर, जिनके मैं दर्शन नहीं कर पाया। अगर आप खजुराहो के मंदिरों में जाओगे तो आपको पीढ़ी–दर–पीढ़ी जैसे मंदिर नए बनाए गए थे वैसे–वैसे मूर्तियों में आपको बहुत अंतर दिख जाएगा।

खजुराहो के भव्य दर्शन करने के बाद मैं मंदिरों के परिसर से बाहर आ गया व बाहर रामकेश व सागर भइया मेरा इंतज़ार कर रहे थे साथ में सर भी थे, मंदिर के दर्शन करने के बाद हम सर के घर पहुँचे जहां उनकी प्यारी सी चार साल की बेटी आश्वी व उनका बेटा वंश रहता हैं, ये दोनों ही कल दादा–दादी जी के घर आने वाले हैं और कुबेर भइया के भी काफ़ी सारे दोस्त होली खेलने आने वाले हैं।

घर पहुँचकर हमनें छककर खाना खाया और दिन भर की थकान निकालने के लिए सो गए, और हमारा आज का सफ़र ऐसे ही ख़त्म होता हैं।

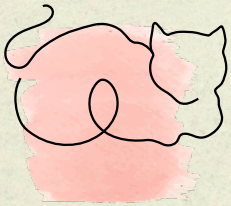

18 मार्च, 2022
होली, मधुमक्खी का हमला और भांग का नशा

आज होली थी व मेरा आज का दिन शुरू हुआ, बिल्लू की गुर्राहट के साथ, मुझे लग रहा था वो मुझे काट ही लेगा, मगर मैं बच गया क्योंकि वो पहले से काफ़ी ज्यादा तंग कर चुका था।

जब मैं बिस्तर में लेटे–लेटे ऊँघ रहा था और मुझे लग रहा था की घर में कोई नहीं हैं, आख़िर में उठने पर पता चला की घर में सभी बैठे हैं शोर कोई नहीं कर रहा। मुझे बड़ा अचरज हुआ की घर में होली को लेकर कोई ख़ास उत्साह नहीं था और लग रहा था की सिर्फ़ गुलाल का टीका ही लगाया जाएगा।

मैं सुबह–सुबह 7 बजे ही उठ गया था चूँकि आज कल मैं जल्दी नहीं उठ रहा था तो सूर्य भगवान को भी जीतने की आदत लग गयी थी और पता नहीं कैसे दिन लम्बा लगने लग गया था, और अब तो मैं फल खा–खा कर भी थक गया था। मुझे पता था की आज कुबेर भइया के दोस्त भी आने वाले है, बीकानेर में जब होली मनाई जाती हैं तब लोगों को पहचानना मुश्किल हो जाता हैं, मानो लोग अपने मन की भड़ास होली खेलने में निकाल रहे हों।

मध्यप्रदेश और राजस्थान में मैंने बहुत सारे अंतर देखे जैसे यहाँ सब्ज़ी बड़ी–बड़ी काटी जाती हैं व लोग पेट साफ़ करना खुले में ज्यादा पसंद करते हैं, और यहाँ ज़्यादातर परिवार बड़े–बड़े हैं व पहनावा ही एक ऐसी जो राजस्थान और मध्यप्रदेश में एक जैसा हैं, मध्यप्रदेश व राजस्थान में कोई प्राकृतिक समानताएँ नहीं हैं।

आज लगभग 11 बजे मैं आदर्श के साथ शतरंज खेल रहा था क्योंकि उसने मुझे युद्ध के लिए ललकारा था और मैं कोई कायर हूँ नहीं की छोटे बच्चे की ललकार से ड़र जाऊँ। खेल शुरू होने से पहले आदर्श ने बताया था की उसने पहले कृत्रिम दिमाग़ के साथ ही खेल रखा हैं। खेलते वक्त मैंने देखा की वह हर बार चाल में फँस जाता हैं और उसका घोड़े पर क़ाबू नहीं हैं, शतरंज में जब घोड़ा 4 के बीचवाले खानों में खड़ा होता हैं तब वह सबसे भयावह मोहरा होता हैं।

12 बजे के आसपास कुबेर भइया के दोस्त होली मनाने के लिए बाहर के गेट के आगे आ गए थे और मैंने सोचा था साथ में भांग तो ज़रूर लाएँगे मगर वो साथ में पनीर की सब्ज़ी और बाटी बनाने का सामान लाए थे। मुझे यह सब देखकर काफ़ी ताज्जुब हुआ क्योंकि मैं एकदम अलग ही संस्कृति में आ गया था, आपको भांग के बारे में भी थोड़ा बता दूँ की जब आप भांग का सेवन करते हैं तब उसी वक्त आपको नशा नहीं होता हैं व भांग कुछ देर बाद असर करती हैं।

नीलेश भइया आखिरकार भांग ले के पहुचे, उन सभी भइया ने मिल कर मसाला, आटा, दूध, भांग, पनीर आदि, इकट्ठा किए थे, और बाहर के गेट पास पेड़ के नीचे बैठकर खाना बनाने का विचार था। उन्होंने वहीं चूल्हा बनाया, उन्हें देखकर मुझे महसूस हुआ कि लकड़ी का चूल्हा बनाना बहुत आसान हैं, बस खाना बनाने वाला चाहिए। उन्होंने जैसे ही आग जलाई तो शुरू में काफ़ी सारा धुआँ उठा था और बाद में आग जल गयी, वहीं पनीर की सब्ज़ी बनने ही वाली थी कि बहुत सारी मधुमक्खियाँ सिर के ऊपर मंडराने लगी, एक भइया के तो कान में जाकर फँस गयी थी व बहुत ही मुश्किल से निकली। मधुमक्खियों ने 6 लोगों को काटा था, पहले मेरा यह मानना था की मधुमक्खियाँ उसे ही काटती हैं जो उन्हें छेड़ता हैं मगर आज मेरा यह भ्रम टूट गया था, इसी बीच सर अपनी फ़ैमिली के साथ होली खेलने आ गए थे।

और इसी के साथ हमारी इस साल की होली यादगार बन गयी थी, किसी के कंधे पर मधुमक्खी खा रखी हैं, किसी के गर्दन पर, किसी की नंगी पीठ पर, किसी के हाथ पर, एक बारी को तो सभी लोग बिखर गए थे, उस वक्त सभी लोग अपनी ज़िंदगी के लिए भाग रहे थे। काफ़ी देर बाद सभी ने सामान अंदर लाने का तय किया कॉल के ज़रिए, तो सभी ने अपने शरीर को ढका और मधुमक्खी वाले पेड़ के नीचे से सामान निकालने चल दिए। उस वक्त मैं अपना साहस दिखाने के लिए बिना शर्ट पहने ही चल दिया, और कढ़ाई उठाकर ले जाने ही वाला था की एक मधुमक्खी ने मेरे दाएँ कंधे पर डंक मारा। वह डंक खा कर मुझे लगा जैसे मधुमक्खियों ने मेरा फ़ायदा उठाया हैं, वहाँ से दोड़ते हुए मैं जल्दी से एक ही मच्छर दानी में घुस गया जहां बिल्लियों और कुत्तों के साथ बाक़ी लोग भी घुसे हुए थे।

काफ़ी देर बाद जब सभी का दर्द कम हुआ तब सभी मच्छर दानी से बाहर निकले और भांग का सेवन किया गया, मैंने आज पहली बार भांग देखी थी, मुझे पहली बार भाग पीकर लगा जैसे मुझे चढ़ती ही नहीं हैं। दोपहर के लगभग 1 बजे थे सभी भइया ने होली का माहौल बना दिया था, मगर मुझे यह होली काफ़ी ज्यादा फीकी लग रही थी, खेद मुझे तब हुआ जब मैं लोगों की शक्ल पहचान पा रहा था। होली खेलने के बाद कुएँ से मोटर चलाकर, नहाया गया सभी लोग नहाने का भी अलग ही आनंद ले रहे थे।

होली के भोज की तैयारी, छत्तरपुर , मध्य प्रदेश

लगभग 3 बजे के आसपास खाना खाया गया, खाना खाने के बाद सभी लोग अपने–अपने घर चले गए थे, बस सर की फ़ैमिली रुक गयी थी। खाना खाने के बाद मैं तो बिस्तर पर जाकर जैसे ही लेटा मेरा शरीर अपने–आप धरती में खिंचा जा रहा था और ऐसा लग रहा था की धरती का गुरुत्वाकर्षण मेरे लिए 9.8 मीटर प्रति सेकंड की बजाय 100 मीटर प्रति सेकंड हो गया था, और मैं बिस्तर से हिल भी नहीं पा रहा था, उसके बाद मेरी आँख सीधी 8 बजे खुली।

जब मेरी आँख खुली तब भी मेरी पलकें मेरा साथ नहीं दे रही थी व कैसे ही कर के मुझे 9 बजे तक होश आया और खाना खाने के बाद में 10 बजे तक वापस सो गया, और मेरा आज का यह दिन ऐसे ही ख़त्म होता हैं।

19 मार्च, 2022
मशीन से चारा काटना

मेरा आज का दिन शुरू हुआ मेरे कानों में पड़ने वाली चहल–पहल के साथ, और आज मुझे धूल वाली एलर्जी ने भी आकर नहीं घेरा था। आज घर में कुबेर भइया के रिश्ते को लेकर बात चल रही थी व 9 बजे के आसपास दादा जी, आदर्श व कुबेर भइया तीनों ही, लड़की वालों के यहाँ चल दिए। उन्हें लगभग 100 किमी. सफ़र कर के दूसरे किसी गाँव पहुँचना था, घर में 5 लोग बचे थे, जो थे दादी जी व रामकेश, सागर व बबलू भइया और मैं।

मुझे महसूस हुआ की मध्यप्रदेश की संस्कृति व संस्कार दोनों ही राजस्थान से अलग हैं, यहाँ सब्ज़ी काटने से लेकर लोक देवता तक अलग होते हैं। मुझे अचरज तो तब हुआ जब दादी जी लोक देवता की पूजा कर रही थी और मैंने उनसे लोक देवता की कहानी पूछी तो उन्होंने बताया की उन्हें लोक देवता की कहानी नहीं पता है। उनकी सासू माँ भी यही पूजा करती थी इसलिए उन्हें भी अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए यह पूजा करनी हैं।

मैंने देखा कि उन्होंने दीवार पर 5 हाथ बनाए हुए है, लग रहा था जैसे पाँचों हाथ अलग–अलग व्यक्तियों के हैं, व पास में ही दीपक भी प्रज्ज्वलित किया गया था।

आखिरकार यह यात्रा 20 तारीख के बाद ख़त्म होने वाली हैं और मुझे इस बात का कोई ख़ास दुःख नहीं हैं क्योंकि यात्रा काफ़ी लम्बी हो गयी थी।

आज दोपहर को खाना खाने के बाद मैंने बबलू भइया से निवेदन किया की मुझे गाय का चारा काटना हैं, आपने चारा काटने वाली मशीन तो देखी ही होगी, यह मशीन मध्यप्रदेश के गाँवों के लगभग हर घर में मिल जाएगी। मैंने यह मशीन पहली बार देखी थी, और मैं ज्यादा उत्साहित था उस मशीन से चारा काटने के लिए। तो सबसे पहले मैं और रामकेश भइया खेत से चारे का गट्ठर लाए, बाद में उस मशीन में बबलू भइया चारा डाल रहे थे और मैं उस मशीन का हैंडल घुमा रहा था। उस मशीन की हैंडल घूमते वक्त मुझे काफ़ी थकान महसूस हो रही थी, और काफ़ी देर बाद जाकर लगभग 2 गट्ठर चारा हम दोनों ने मिलकर काटा।

आज का दिन कुछ ख़ास नहीं था हम चारों काफ़ी देर तक घर में ही बैठे थे व बातें कर रहे थे, शाम होने तक हम सभी ने आलू टमाटर की सब्ज़ी व रोटी बनाकर खाया व तब तक कुबेर भइया व बाक़ी लोग भी आ गए थे और खाना खाने के बाद लगभग 9 बजे हम सभी अपने–अपने बिस्तरों में जाकर सो गए।

20 मार्च, 2022
यात्रा और आगे

मेरा आज का दिन शुरू हुआ दो लोगों की बहस सुनने के साथ, मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ की मेरे रेल चढ़ने से एक दिन पहले ही बनारस के हिंदू विश्वविद्यालय का प्लान निश्चित हो गया था यह बात सुनने पर मेरे कानों में मानों गुड़ घुल गया था क्योंकि मुझे भगवान विश्वनाथजी के ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने को मिलने वाले थे और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय देखने को भी मिलने वाला था।

बनारस भगवान शिव की नगरी कहीं गई है व इसे हम काशी व वाराणसी के नाम से भी जानते हैं। हमारे यहाँ कहा जाता हैं कि आप जैसे–जैसे बनारस की तरफ़ चलते हैं उतनी ही भोजन की स्वादिष्टता कम हो जाती हैं, पर मैंने ये भी सुना हैं कि बनारस के पान और साड़ियों का कोई मुक़ाबला नहीं हैं। और अस्सी नामक घाट से आपको गंगा उत्तरवाहिनी होती हुई दिख जाएगी।

बनारस अपने आप में एक इतिहास हैं, यह आपको 500 साल पुराने घर भी देखने मिल जाएँगे। बड़े से बड़े कलाकार यहां घाटों पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए

मिल जाएँगे, कई बार ऐसा भी होता हैं की कोई बड़े कलाकार का प्रदर्शन मात्र 5–10 दर्शक ही देख रहे हैं।

आज बबलू भइया को भी अपने घर जाना था व उन्हें 1 बजे के आसपास रेलगाड़ी चढ़ना था, तो हम सभी लोग उन्हें विदा करने छत्तरपुर स्टेशन तक चल दिए। बबलू भइया ने मुझे बताया कि हर रेलगाड़ी का स्टेशन लगभग 1 किमी. लम्बा होता हैं व साथ ही एक छोटी सी पीले रंग की ट्रेन पटरी की मरम्मत के लिए साइड में खड़ी रहती हैं, उन्होंने बताया रेलगाड़ी लेट आ सकती हैं मगर समय से पहले आकार जल्दी नहीं निकल सकती। रेल विभाग काफ़ी कठोर क़ानून रखता हैं व रेल चलाने वाले व्यक्ति को रेलगाड़ी चलाने की बजाय रेलगाड़ी रोकने के रुपये मिलते है।

आज रेलगाड़ी लगभग 20 मिनट लेट थी और बबलू भइया को सपरिवार लम्बा सफ़र करना था, कुछ देर बाद जब ट्रेन आने वाली थी उससे पहले आदर्श की माताजी ने मुझे 100 रुपये हाथ में थमा दिए व रामकेश भइया के पैर छू कर उन्हें भी रुपये थमा दिए, और थोड़ी देर बाद जब रेल आयी तब बबलू भइया अपनी बेटी शुभी व मीरा जी को लेकर चढ़ लिए।

हमनें भी 4 बजे तक नंदी की कमर में गट्ठर बांधे और दादा–दादी जी का आशीर्वाद लेकर चल दिए। जब हम बनारस की तरफ़ निकले तो इस बार साथ में नीलेश भइया नहीं चले थे, उन्होंने कहा कि वें हमें सीधा हमारे गंतव्य पर मिलेंगे क्योंकि उन्हें थोड़ा समय घर वालों के साथ और बिताना हैं। लगभग 50 किमी. सफ़र करने के बाद जब हम वन की तरफ़ बढ़ रहे थे तब जंगल के किसी छोर से सर ने रामकेश भइया को कॉल किया और अपनी तरफ़ बुला लिया मैंने देखा लगभग 30–40 बच्चों के साथ सर जंगल से प्लास्टिक का कचरा उठा रहे थे। पास ही में एक ट्रैक्टर भी खड़ा था जो आधे से ज्यादा भरा हुआ था, और फिर सर ने हम सभी को बच्चों से मिलवाया, वें काफ़ी मेधावी थे। साथ–ही–साथ उन्हें अंदाज़ा भी नहीं था वें कितना बड़ा काम कर रहे हैं, पास ही में एक फ़ॉरेस्ट ऑफ़िसर भी खड़े थे ताकि बच्चों का ध्यान रख सकें और जंगल की जानकारी देने के लिए सर तो हैं ही।

लगभग 2 किमी आगे जाने पर हमनें देखा की कुछ लोग जंगल में गाड़ी रोककर शराब पी रहे हैं, मुझे यह देखकर बहुत दुःख हुआ क्योंकि वहाँ बच्चे कचरा उठा रहे थे और यहाँ ये लोग फिर से गंदा कर रहे थे, मैंने रामकेश भइया को यह बात बतायी तब उन्होंने सर को फ़ोन लगाया क्योंकि उनके साथ फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट के एक पुलिस अधिकारी थे, उन्हें शिकायत करने के बाद हमें पता नहीं सर ने उन शराबियों का क्या किया।

गिद्धों की पहाड़ी, सती अनुसुइया, चित्रकूट, मध्य प्रदेश

हमनें गहरे जंगल से बनारस की तरफ़ जाने का निर्णय किया क्योंकि उस रास्ते से हमें विंध्याचल की ऊँचाइयों को नंदी से नहीं नापना पड़ेगा, हमनें रास्ते में 2 दिगम्बर जैन संन्यासियों को भी देखा जिन्होंने बिल्कुल भी कपड़े नहीं पहने थे और किसी यात्रा पर निकले थे, उनके साथ 5–6 लोग आजू–बाजू चल रहे थे, उस वक्त मुझे सच में लगा की जैन धर्म भारत के सबसे मुश्किल धर्मों में से एक हैं।

रास्ते में हम लोग 7 बजे के आसपास किसी शहर में नाश्ता करने रुके, उस शहर में एक ख़ास तरह का उत्सव मनाया जाता हैं, उस उत्सव में लगभग 100 फ़िट लम्बी लकड़ी पर 6 से 8 किलो तक का गुड़ बांध दिया जाता है और नीचे 10–15 औरतें डंडा लेकर खड़ी होती है, साथ ही जो भी व्यक्ति उस गुड़ को उतारने की हिम्मत रखता हैं उसे स्त्रियों के डंडे की मार झेलते हुए उस गुड़ को उतरना होगा।

यह बात हमें वहाँ के एक स्थानीय व्यक्ति ने बतायी थी, उसने यह भी बताया कि अभी उस गुड़ के लिए चंदा इकट्ठा किया जा रहा हैं, वहाँ से काफ़ी देर जब लगभग हम 70 किमी. की दूरी पर आ गए थे तब सागर भइया को याद आया की वें अपनी छड़ी पिछले शहर में ही छोड़ आएँ हैं, हम अब वापस नहीं जा सकते थे इसके पीछे 2 कारण थे पहला वह लकड़ी अभी तक अपनी जगह से ग़ायब हो गयी होगी या फिर अंधेरे में मिलेगी नहीं, दूसरा अगर वापस गए तो यात्रा में पीछे हो जाएँगे, इसलिए हमनें यात्रा जारी रखी। रात के समय में लगभग 11 बजे तक हम सती अनुसुईआ पहुँच गए थे, सती अनुसुईआ मंदाकिनी नदी का उद्गम स्थल है व यहाँ पर भगवान श्री राम ने अपने छोटे भ्राता भरत को अपनी चरण पादुकाएँ दी थी।

सती अनुसुईआ में एक 11 फ़िट बड़ी चट्टान हैं जिसपर भगवान शिव की मूर्ति बनी हुई है, साथ–ही–साथ यह मुस्लिम आक्रांता से भी बच गयी, इस पर नीचे की तरफ़ एक बाबा बना हुआ हैं जैसा मैंने रानी की बाव और पाटन के सूर्यमंदिर में देखा था, वह बाबा भगवान शिव के सामने हाथ जोड़कर बैठ था, तो हमनें वहीं उस चट्टान के पास तम्बू गाड़ लिया और छककर खर्राटे मारने लगे और इसी कि साथ हमारा आज का यह सफ़र ख़त्म होता हैं।

21 मार्च, 2022
बनारस का सफ़र

मेरा आज का दिन शुरू हुआ मोर की आवाज़ सुनने के साथ, आज हम एक बहुत बड़ी चट्टान के पास खड़े थे व साथ–ही–साथ वहाँ से मंदाकिनी भी बह रही थी। मंदाकिनी, युमना कि एक सहायक नदी है जिसका उल्लेख रामायण में भी हैं।

आज मेरी आँख सूर्य भगवान से पहले खुल गयी थी व अब लग नहीं रही थी। आसपास का वातावरण काफ़ी भयावह लग रहा था, क्योंकि हम जंगल के उस जगह पर खड़े थे जहां एक तरफ गिद्धों की पहाड़ी हैं, तो दूसरी तरफ़ मंदाकिनी नदी का उद्गम हैं, और उसके आगे घोर घना जंगल। मैंने देखा 4 बजे के आसपास यहाँ के पंडित पूजा करना शुरू कर देते है और काफ़ी ख़ास पूजा होती हैं क्योंकि यह पूजा भगवान दिनकर के उगने से पहले की जाती हैं, मैं उस वक्त एकदम बुरी हालत में था, मैंने नहाया हुआ नहीं था, साथ–ही–साथ मेरे बाल बहुत गंदे लग रहे थे व जुखाम भी हो ही गया था।

वह मंदिर सती अनुसुईआ माता का था, मैं उस मंदिर के आगे पड़ी बैठने की शिला पर पसर गया, और जब कुछ देर बाद आरती शुरू हुई तब मैं उस पूजा का भागी बनने के लिए दौड़ पड़ा। वहाँ मुझे देखकर एक पंडा काफ़ी आँखे निकाल रहा था, क्योंकि मैं नहाया हुआ नहीं था, उसने मुझे आरती का भागी बनने दिया, मगर कोई भी चीज़ छूने से मना कर दिया।

वो भव्य आरती ख़त्म होने तक सूर्य भगवान भी उदय होने वाले थे, साथ ही टेंट में सो रहे भइया लोग भी उठ गए। सुबह–सुबह उठते ही उन्हें पेट साफ़ करना था इसलिए उन्होंने पास ही एक शौचालय में जाकर अपना पेट साफ़ किया। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी की अब हमारे देश में जगह–जगह साफ़ शौचालय हैं व कोई भी इसका उपयोग 5 रुपय देकर कर सकता हैं।

फिर हम वापस मंदाकिनी के किनारे आए, वहाँ कुबेर भइया को किंगफिशर पंछी की बहुत ही ख़ास प्रजाति मिल गयी, और वें वहीं पर उसका फ़ोटो लेने के लिए लेट गए। काफ़ी देर तक वें उसका फ़ोटो लेते रहे और उस चिड़िया को देखकर भी लग रहा था कि वह भी फ़ोटो खिंचवाना चाहती हैं। जब हम सामान बांध रहे थे तब काफ़ी सारे बंदरों ने आकार हमें घेर लिया, रामकेश भइया ने बताया यह उनकी सामान चोरी करने की चाल है, अगर आप उनसे उलझते हैं तो बाक़ी बंदर आपका सामान चोरी कर लेंगे।

वहाँ से निकल कर हमनें मंदाकिनी की उद्गम के पास ही स्नान किया और स्नान करते वक्त मैंने देखा काफ़ी सारी छोटी–छोटी मछलियों ने आकार हमें घेर लिया हैं, मुझे यह बात नहीं पत्ता थी मैंने तो बस नदी के गर्मा–गर्म पानी का आनंद उठा रहा था, अगर हम उस नदी के बीच के मध्य में जाए तो पानी लगभग 20 फ़िट गहरा हो जाता हैं, इसलिए मैं वहाँ नहाने नहीं गया।

मंदाकिनी के स्नान करने के बाद हम सभी लोग उत्तर प्रदेश की तरफ़ चल दिए जो अब लगभग हमसें 50 किमी दूर होगा। इस बार भी हमें घोर जंगल के बीच से होकर

निकलना थ, मैंने देखा इस जंगल के पेड़ पहाड़ी पर नहीं उगे हैं मगर फिर भी इनकी ऊँचाई ग़ज़ब की हैं। उन पेड़ों पर लंगूर रहते थे, लंगूर व बंदरों में अंतर बस इतना ही हैं कि लंगूर के पास लम्बी पूँछ होती हैं और उसका मुँह काला होता हैं। इस बार हम जब खेतों के पास से होते हुए गुज़रे तब मैंने देखा लोग यहाँ पर खुले में पेट साफ़ कर रहे हैं।

ऐसे ही नज़ारे देखते देखते मेरी नज़र एक पोस्टर पर गयी उस पर योगी व मोदी जी बने हुए थे, तब मुझे अहसास हो गया की हम उत्तर प्रदेश में पहुँच गए हैं, उत्तर प्रदेश में हम बिना पहाड़ी चढ़े पहुँच गए थे। वहाँ पहुँचकर हमनें सबसे पहले नाश्ता किया, वह नाश्ता ठीक बना था, हमनें वहाँ समोसे, जलेबी व ब्रेड पकोड़े का सेवन किया और आगे चल दिए। मैंने देखा जैसे–जैसे हम बनारस की तरफ़ जा रहे थे वैसे ही आबादी भी बढ़ रही थी। इसका सबूत मुझे अगले 5 मिनट में मिल गया जब हम एक ट्राफ़िक जाम में फँस गए थे व अगले 20 मिनट तक कोई हिल नहीं पाया।

और हमनें उसके बाद काफ़ी देर तक गाड़ी में सफ़र किया होगा, लगभग 4 घंटे तक हम ट्रेफ़िक जामों में फँसते हुए लगभग 1 बजे हम वाराणसी पहुँच गए थे, वहाँ पहुँचने से पहले मैंने देखा कि 1 किमी. चौड़ी गंगा नदी बहुत दूर से साफ़ दिख रही हैं और काफ़ी गंदी दिख रही हैं।

हम वाराणसी के अंदर बी०एच०यू० लगभग 2 बजे पहुँच गए। मैं विश्वविद्यालय को देखकर उत्साहित हो गया, क्योंकि यहाँ हर विषय के लिए बड़ी–बड़ी इमारतें बनी हुई थी, जो बता रही थी की आज़ाद भारत किसी भी देश को पीछे लांघ सकता है।

काफ़ी देर तक विश्वविद्यालय अंदर ही गाड़ी को चलाने के बाद हम बी०एच०यू० के आई०आई०टी० परिसर में पहुंच गए। लगभग 3 बजे के आसपास में विश्वविद्यालय के विश्वनाथ मंदिर के दर्शन के लिए चल दिया, हालाँकि मुझे रास्ता नहीं पता था इसलिए मैं लोगों से पूछते हुए लम्बे रास्ते से होते हुए भगवान विश्वनाथ के दर्शन करने गया।

वहाँ मैंने देखा की मंदिर भक्तों से खचाखच भरा हुआ हैं और लोग दीवारों के साथ फ़ोटो लेने में बिज़ी थे। मैं तो बाबा के भव्य दर्शन करके निकला, व मैंने वापस पहुँचने में ही 6 बजा दिए, और फिर हम सभी लोग अस्सी घाट की तरफ़ चल दिए, वहाँ मैंने देखा कि लोग गंगा मइया के लिए बहुत प्रेम जता रहे हैं। हर शाम को जब पूजा होती हैं तब बहुत सारे लोग उस पूजा में शामिल होते हैं, हम लोग भी पास ही में बैठकर पूजा व उसके होने वाली क्रियाएँ देख रहे थे।

बाद में हम लोगों ने पास ही एक धर्मशाला में किराये का कमरा लेकर सो गए और हमारा आज का सफ़र ख़त्म होता है।

इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी (बीएचयू), वाराणसी, उत्तर प्रदेश

22 मार्च 2022
भगवान विश्वनाथ का आशीर्वाद

आज मेरी सुबह की शुरुआत एक वाद–विवाद की आवाज से हुई, मैंने देखा कि गेस्ट हाउस में हमारे पड़ोसी एक–दूसरे से लड़ रहे हैं। पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे इसमें कुछ भी अजीब नहीं लगा। 3–4 मिनट बाद उस लड़ाई की लपटें मेरे कमरे के दरवाजे पर पहुँच गईं, और एक बूढ़ी औरत ने मुझे अपनी बड़ी लाल आँखों से देखा, और उस समय मेरा शरीर ऐसे हिल नहीं रहा था जैसे वह मुझे सम्मोहित कर रही हो।

जैसा कि हम बनारस में थे और भगवान विश्वनाथ का आशीर्वाद पाने की कोशिश कर रहे थे, हम गेस्ट हाउस में जल्दी स्नान करते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, बनारस गंगा नदी के पास बसा हुआ है, और लाखों लोग अपने जीवन में प्रतिदिन उस पवित्र जल का उपयोग करते हैं। आज गंगा में स्नान करने की मेरी बारी थी, लेकिन गेस्ट हाउस के नल से स्नान करने के बाद हम सभी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए भगवान शिव के मंदिर के गए।

लोगों को पवित्र नदी और उसके खूबसूरत घाटों को प्रदूषित करते हुए देखना काफी निराशाजनक था। मैंने देखा कि कई प्लास्टिक की बोतलें और अन्य कचरा तैर रहा था, और नदी में काफी बदबू आ रही थी। मैंने समाचारों पर देखा कि भारत सरकार बहुत अधिक पैसा खर्च करके नदी को साफ करने की कोशिश कर रही है। लेकिन मुझे लगता है कि बनारस के लोग इस अभियान का समर्थन नहीं कर रहे हैं।

जब हम भगवान विश्वनाथ के मंदिर के द्वार के पास पहुंचे, तो मैंने देखा कि हमारे सामने लगभग 500 लोग पहले से ही लंबी लाइन में खड़े हैं। मंदिर परिसर में जनसंख्या; सूरज के उगने के साथ बढ़ रही थी। और जब हमें आखिरकार भगवान शिव को देखने का मौका मिला, तो हमारे पीछे लगभग 1000 लोग कतार में थे।

रामकेश भइया ने मुझे बताया कि पहले कम लोग आशीर्वाद प्राप्त कर पाते थे और जगह की कमी के कारण इस मंदिर में भगवान शिव के दर्शन सही से नहीं हो पाते थे। भारत सरकार मुख्य मंदिर के आसपास के लगभग 300–400 घरों को हटा कर भगवान शिव के भक्तों के लिए एक बड़ा क्षेत्र बनाया।

भगवान शिव के शानदार दर्शन के बाद हम बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बी०एच०यू० चले गए। तो, मूल रूप से बी०एच०यू० एक– 100 साल पुराना विश्वविद्यालय है, जो 1300 एकड़ के क्षेत्र में फैला है, विश्वविद्यालय के केंद्र में बाबा विश्वनाथ का एक और मंदिर है, छात्र इसे वीटी कहते हैं।

बी०एच०यू० के आई०आई०टी० परिसर से, हम 11 छात्रों के एक समूह को साथ लेते हैं। NCL और IIT (BHU) के बीच सहयोग के माध्यम से टीम रोज़हब इस अभियान को मॉडरेट करने के लिए लगे हुए थे, और छात्रों को– सालखान फॉसिल पार्क, संजय नेशनल पार्क, सोन घड़ियाल अभयारण्य, पाषाण युग की गुफा पेंटिंग आदि का दौरा कराने वाले थे।

इसलिए, अंत में दोपहर 3 बजे हम सारे छात्रों को लेकर, 1.30–2 घंटे की ड्राइविंग के बाद हम सालखान फॉसिल पार्क पहुंचे, जहां करीब 1.4 अरब साल पुराने जीवाश्म पाए गए हैं। मेरे हिसाब से वे जीवाश्म किसी प्रकार की मछली प्रजाति के हैं, या बड़े जीव या कुछ और। जीवाश्म पत्थर पर कई वृत्त बने हैं जो हमें 1.4 अरब साल पहले रहने वाले जीवों के बारे में जानकारी देते हैं।

हम जीवाश्मों के बारे में जानकारी प्राप्त करते है, 1 घंटे के अवलोकन के बाद, आगे बढ़कर हम सोन नदी को पार करते है, हमने एनसीएल के गेस्ट हाउस तक पहुंचने के लिए 3 घंटे की यात्रा और की, और आज हमने अपने दौरे का पहला फ्लैग स्टॉप हासिल किया, और इस तरह हम आज की यात्रा समाप्त करते हैं।

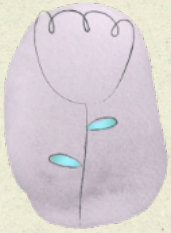

23 मार्च, 2022
एक तोता ज्योतिषी

मेरे दिन की शुरुआत एक एनसीएल के गेस्ट हाउस में हुई। आज मुझे दौरे में शामिल नहीं होना पड़ा क्योंकि आज मेरे हिसाब से कुछ खास नहीं था। अन्य लोग जंगल और सोन घड़ियाल अभयारण्य का दौरा करने गए, और मेरे अनुसार यह गहरे जंगल में 50 किमी क्षेत्र में एक शेर खोजने जैसा था। इसलिए, मैंने आज की यात्रा को छोड़ दिया, और यह मेरे लिए अपने विलंबित लेखन को पूरा करने का एक अवसर भी था, इसलिए आज मेरे पास व्यक्त करने के लिए और कुछ नहीं है।

शाम करीब 5 बजे, मैं कुछ फल और नाश्ता खरीदने के लिए गेस्ट हाउस के बाहर जाने में कामयाब रहा। मेरे पास स्मार्ट फोन नहीं है, इसलिए मैंने कंप्यूटर से आस–पास के इलाके का गूगल मैप याद करने की कोशिश की, लेकिन वह काम नहीं आया।

जब मैं सब्जी मंडी पहुंचा तो मैंने देखा कि एक वैन स्थानीय लोगों को बहुत सस्ते दामों पर कुछ पेन बेच रही है। यह मेरे लिए थोड़ा अजीब था क्योंकि मेरे आस–पास (बीकानेर, राजस्थान) में कोई भी ऐसा नहीं करता। मैंने पहली बार एक तोता ज्योतिषी भी देखा, मैं उनके तोतों की मदद से अपने भविष्य के बारे में उनसे परामर्श करने की सोच रहा था, लेकिन मुझे नाश्ते को लेने और गेस्ट हाउस वापस जाने में देर हो रही थी। इसलिए, मैंने अपने गंतव्य पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की, लेकिन कुछ समय के लिए रास्ते से चूक गया। और जब मैं अंत में वापस गेस्ट हाउस पहुँचा, तो मैंने देखा सागर भाइया लाल आँखों से इंतज़ार कर रहे हैं। वो आंखें मुझे बता रही थीं कि मैं बड़ी मुसीबत में हूं क्योंकि मुझे देर हो गई थी, और मैंने अपना छोटा फीचर फोन भी गेस्ट हाउस छोड़ दिया था, इसलिए जब मैं बाहर था तो किसी का मुझसे सम्पर्क नहीं हो पाया, आधे घंटे के बाद सागर भाइया ने मुझे बख्श दिया क्योंकि मैं बच्चा हूँ।

लगभग 10 बजे मैं अपना तकिया सम्हालता हूं और एक मीठा सपना देखता हूं, और इस तरह हमारा आज का दिन समाप्त हो गया।

24 मार्च, 2022
मेरी टिकिट हो गई

मेरा आज का दिन शुरू हुआ एन०सी०एल० के गेस्ट हाउस में, मुझे काफ़ी अच्छा लगा यह जानकर की मेरी ट्रेन की टिकिट 26 तारीख़ की तय कर दीं गयी हैं। यह बात सुन कर मुझे बुरा तब लग सकता था जब मुझे यात्रा करते हुए 10–15 दिन ही हुए हों मगर आज मेरी यात्रा का 26 वाँ दिन था। मुझे लग रहा था की आज विध्यार्थियों की यात्रा का भी आखिरी दिन हैं। और अब यह यात्रा किस नए मोड़ पर जाने वाली थी इसका मुझे रत्ती भर भी अंदाज़ा नहीं था।

आज हमें एक बाघ संघरक्षित छेत्र में घूमने जाना था, साथ ही एन०सी०एल० की खदानें भी देखने जाना था, आपको याद हो तो जब हम पिछली बार खदानों के पास आए थे तो मेरा खदान देखना रह गया था व इस बार अगर बाघ दिख गया तो हमारा भाग्य।

आज की यात्रा में हमें काफ़ी दूर सफ़र करना था व जंगल के पास ही हमें एक गाँव में सोना था। साथ ही हमें कुछ आस्था थी की बाघ दिख जाएगा, बाद में रामकेश भइया ने बताया कि 200 किमी के क्षेत्र में केवल 10 से 20 बाघ हैं तो मेरी बाघ देखने

संजय डुबरी टाइगर रिजर्व, कैम्प बनास, हथवार, मध्य प्रदेश

की आशाएँ पाताल को छूने लगी। मगर उसके बाद वन विभाग वालों ने बताया कि आज उनको बाघ 2 बार इसी जगह दिख चुका हैं, तब जाकर मुझे कुछ आस बंधी।

आज सुबह सबसे पहले हम खदानों की तरफ़ चाल दिए, वहाँ पहुँचने से पहले हमें जूते पहनना अनिवार्य था। अंदर जाने पर सबसे पहले हमें एक कृत्रिम तालाब दिखाया गया, हम सभी 20–30 लोग जब तालाब के पास जाकर इकट्ठा हो गए तब एन०सी०एल० के ही एक गाइड ने हमें बताया कि, एन०सी०एल० के पास 312 वर्ग कि.मी. तक की ज़मीन सिर्फ़ कोयला निकालने के लिए पड़ी हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उनकी कम्पनी सिर्फ़ कोयला निकालकर वहाँ से चली नहीं जाती, क्योंकि अगर वे ऐसा करेंगे तो यह पर्यावरण के लिए बहुत बड़ी हानि होगी।

उन्होंने बताया कि ज़मीन में गड़ा हुआ कोयला वृक्षों को कोई फ़ायदा या नुक़सान नहीं करता। जब वे कोयला खोद रहे होते हैं तब खदान की ऊपरी मिट्टी वे सम्भाल कर रख लेते हैं, और जब किसी जगह पर कोयला ख़त्म हो जाता हैं तब रखी गयी मिट्टी की नयी परत बना देते हैं। बाद में उस जगह पर लोगों एवं ड्रोन से बीज़ बो देते हैं, साथ ही बिना किसी ख़ास मदद के वें सभी वनस्पतियाँ उग जाती हैं।

यह सब जानकारी सुनने के बाद हम सभी खदानें देखने के लिए चल दिए, काफ़ी देर सफ़र करने के बाद हम निगाही नामक खदान के बीचो बीच पहुँच गए थे। हम लोग काफ़ी ऊँचाई पर थे, लगभग इतनी ऊँचाई पर की 50 फ़िट बड़े डंपर भी उँगली के नाखून से छोटा दिखे। उनके पास 500 से ज़्यादा डंपर और एक बार में एक कमरे जितना कोयला निकालने वाली बड़े हाथ वाली 23 मशीनें हैं।

हम सभी लोग काफ़ी ऊँचाई पर पर खड़े थे मगर फिर भी जहाँ भी हमारी नज़र जाती वहाँ तक सिर्फ़ खदानें दिखती। किसी को भी हेलमेट और जैकेट के बिना वहाँ जाना माना हैं, मुझे अब भी एक–आध किलो कोयला घर लेकर जाना था, मगर हमें उतना वक्त नहीं मिला, क्योंकि आज अंधेरा होने से पहले हमें जंगल में पहुँचना था।

इस बार हम सभी लोगों ने दोपहर का खाना छोड़ दिया क्योंकि अगर खाना खाने रुकते तो शेर रात को नहीं दिखता, इसलिए हम सभी 1 बजे से लेकर 5 बजे तक गाड़ी में सफ़र करते रहे, हम सभी की गाड़ियाँ एक के पीछे एक ऐसे चल रही थी जैसे किसी बड़े नेता की गाड़ियाँ क़ाफ़िला हों। रास्ते में हम जिस भी गाँव से निकलते वहाँ के लोग गाड़ियों को देखते ही रह जाते। जब हम एक बार 5–10 मिनट के लिए रुके थे तब एक व्यक्ति ने मुझसे आकार बड़े अचरज के साथ पूछा कि– चल क्या रहा है। इस यात्रा की कहानी का मुख्य पात्र होने के नाते मैंने उसे हमारे टूर के बारे में बताया जो एन०सी०एल० के सौजन्य से हो रहा था। काफ़ी देर तक सफ़र करने

के बाद हम सभी लगभग 4 बजे बाघ संरक्षित क्षेत्र में पहुँच गए थे, मेरा यह मानना हैं कि जब हम यात्रा करते हैं तब हमें भूख कम लगती हैं।

जब हम अपने गंतव्य में पहुँच गए तब हमें वन पुलिस द्वारा 4 भागों में बाँट दिया गया। जब हम सभी अंदर घुस रहे थे तब जंगल में बने गाँव के काफ़ी सारे बच्चे ज़ोर–ज़ोर से हमारी गाड़ी की तरफ़ देखकर बाय–बाय चिल्ला रहे थे। मुझे तो उनके बाय–बाय को देखकर लग रहा था की हम बाघ देखने के बाद वापिस नहीं आने वाले। उस जंगल के कोर में पहुँचने पर हमनें एक नदी को पार किया। रास्ते में हमें काफ़ी सारे जानवर जैसे हिरन, बंदर, नील गाय, बुलबुल, भैंसे, लंगूर आदि दिखे। लेकिन 2 घंटे जंगल में जीप से विचरण करने के बाद भी हमें भालू या बाघ न दिखा। जब हम वापस पहुँच गए, तब हम में से ही एक ग्रूप ने दावा किया की उन्हें भालू व बाघ दोनों दिखे हैं साथ ही उन्होंने उनका विडीओ भी बनाया हैं, मगर उसमें जानवर कुछ ख़ास नज़र नहीं आ रहे थे।

जब हम वापस पहुँचे तब तक काफ़ी रात हो चुकी थी व साथ ही हम सभी को भूख लगने लगी थी, इसलिए हमनें एक गाँव में टूरिस्ट के लिए रुकने वाली जगह ढूँढी। और जब हम वहाँ पहुँचे तो नज़ारा ही कुछ और था, दरसल ये गाँव के सरपंच का घर था व आसपास के घर भी उन्हीं के थे। जब हम वहाँ पहुँच कर घेरा बनाकर बैठ गए तब सरपंच के छोटे भाई ने वहाँ का स्थानीय नाच दिखाया। गान में रामायण के भरत को गालियाँ पड़ रही थी, दरसल रामायण के समय जब राम को 14 वर्ष का वनवास मिला और भरत को राज्य तब आम लोगों को यही लगा की भरत ने कोई चाल चली हैं बल्कि उन्हें सच्चाई नहीं पता थी।

आज की रात हम सभी ने कोटेज में सोकर बितायी, और हमारा आज का सफ़र हमारे सोने के साथ ही ख़त्म होता हैं।

25 मार्च, 2022
गाँव और मैं

मेरा आज का दिन गाँव में टूरिस्ट के लिए बने एक कोटेज में, यहाँ आसपास का नज़ारा अपनी ओर काफ़ी ध्यान खींच रहा था, आसपास महुए के पेड़ को छोड़ कर

काफ़ी सारे पेड़ लगाए गए थे। सुबह–सुबह लगभग 7 बजे कोटेज के मालिक ने हमें प्याज़ के पकोड़े बनाकर खिलाए। मैंने एक चीज़ देखी कि जगह बदलने के साथ ही लोगों के खाने के साथ – साथ खाना खाने का तरीक़ा भी बदल जाता हैं, जैसे मध्यप्रदेश में रोटी हाथ में लेकर फिर सब्ज़ी से लगाकर खाई जाती हैं मगर मेरे यहाँ ऐसा नहीं होता।

आज सूर्य भगवन मेरी यात्रा को प्रोत्साहन देने के लिए उग रहे थे, आसपास के पक्षी भी भोर से पहले ही घोंसला छोड़ चुके थे, तेज़ी से चलने वाली सुबह की ताज़ी हवा जो रामदेव बाबा आज सुबह प्रयाणाम करते वक्त लेना भूल गए थे मुझ तक पहुँच गयी। पास ही विध्यांचल पर्वत, मुनि अगस्त्य के आने का इंतज़ार कर रहा था। आज हमें महान नदी के झरने में नहाने जाना था, जो कि हमसे ज्यादा दूर नहीं था। काफ़ी अच्छा माहौल था, मगर यह सब कुछ देर ही टिकने वाला था।

लगभग 15 मिनट सफ़र करने पर ही हम महान नदी के झरने तक पहुँच गए थे, यह झरना नदी के उद्गम से सिर्फ़ 25 किलोमीटर ही दूर था व ज्यादा ऊँचा झरना नहीं थो, लगभग 25 फ़ीट ही ऊँचा था। पानी इतना साफ़ की धरातल दिख जाए, मगर मैं अभी तक जितनी भी नदियों में नहाया था केन उन सभी में सबसे ज्यादा साफ़ थी।

हम सभी लोग काफ़ी देर तक झरने के नीचे नहाए, मगर उस वक्त हमारे साथ आई०आई०टी० पढ़ने वाले बच्चे नहीं थे। वे काफ़ी देर बाद आए और इसी कारण जो रस्सा कस्सी का खेल हम खेलने वाले थे वह समय की अभाव होने के कारण नहीं खेल पाए। इस चीज़ का श्रेय मैं गाड़ी चलाने वाले हमारे एक वाहक को देना चाहूँगा जिनके झगड़ा करने के कारण काफ़ी देर हो गयी, उनको हम प्रेम से जीजा बुलाते हैं, क्योंकि उनकी हरकतें भी ऐसी ही हैं।

काफ़ी देर तक हम लोग विद्यार्थियों का इंतज़ार करते रहे और जब आए तब तक सूर्य भगवान आसमान की ऊँचाइयों को छू रहे थे, इसी कारण वे बीमार भी हो सकते थे। मगर आसपास का वातावरण काफ़ी सिला था वो कड़ी व सूखी गर्मी महसूस नहीं हो रही थी। आसपास के वनस्पति काफ़ी खुश दिख रहे थे मानो उन्हें लोगों को देखकर खुशी हो रही हो व झरना तो हमारे आने के बाद और भी तेज हो गया था, झरने के नीचे रहने वाले कीड़े मकोड़े मेंढक मच्छी आदि सभी एक तरफ़ हो गए थे।

साथ ही मुझे ज़मीन पर महुए के फूल पड़े दिखे मैंने बहुत सारे ज़मीन से ढूँढकर खाए, उस पल मुझे वह जगह स्वर्ग से कम नहीं लग रही थी, और यह पानी स्विमिंग पूल के पानी जैसा नहीं था कि इसने नहाने के बाद फिर से नहाना पड़ जाए, यह महान नदी का पानी काँच से भी ज़्यादा साफ़ था।

महान नदी के झरने, मध्य प्रदेश

आज मेरी यात्रा का 29 वाँ दिन है, और मैं इतना ज्यादा घूम चुका था कि मुझे अब घर की याद आने लगी है, यह यात्रा वृत्तांत पढ़ने में चाहे कितनी भी मज़ेदार लगती हो अब बहुत ज्यादा लम्बी हो चुकी है, कहा जाता हैं भगवान जब भी देता हैं छप्पर फाड़ कर देता हैं, मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ हैं, मैं पिछले 2–3 साल से आशा कर रहा था की बाहर कहीं घूमने ज़ाया जाए मगर ऐसा सम्भव नहीं हो पा रहा था।

कल 26 तारीख़ को शाम को 5.10 मुझे भोपाल से घर के लिए ट्रेन चढ़ जाना था और मैं इसे सयोंग के अलावा और कुछ नहीं कहूँगा क्योंकि मेरी यात्रा शुरू 26 फ़रवरी की शाम को हुई थी, और ख़त्म भी 4.40 पर हो रही हैं, मैं अपने सभी पाठकों से यहीं पर अलविदा लेना चाहूँगा, व हमारी यह यात्रा भी इसी के साथ खत्म होती हैं।

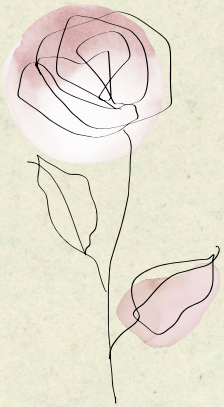

...थोड़ी देर बाद हम वल्लभभाई पटेल की मूर्ति के एकदम पास जाकर खड़े हो गए, और मुझे महसूस हुआ की मूर्ति की सबसे छोटी वाली उँगली का आधा हिस्सा भी मुझसे बड़ा था।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति दुनिया की सबसे बड़ी मूर्ति है! दरसल यह मूर्ति; इंडीयन एंजिनीरिंग मार्बल – की सबसे बड़ी निशानी हैं। और इस मूर्ति को बनाने के लिए देश भर के लाखों किसानो से लोहा दान लिया गया था। इस मूर्ति ने बता दिया है, की भारत अब कभी भी आधुनिक निर्माण के तौर पर पीछे नहीं रहेगा, और पहली बार मुझे अपने भारतीय होने का गर्व महसूस हुआ।

6 मार्च, 2022
निनाद जोशी

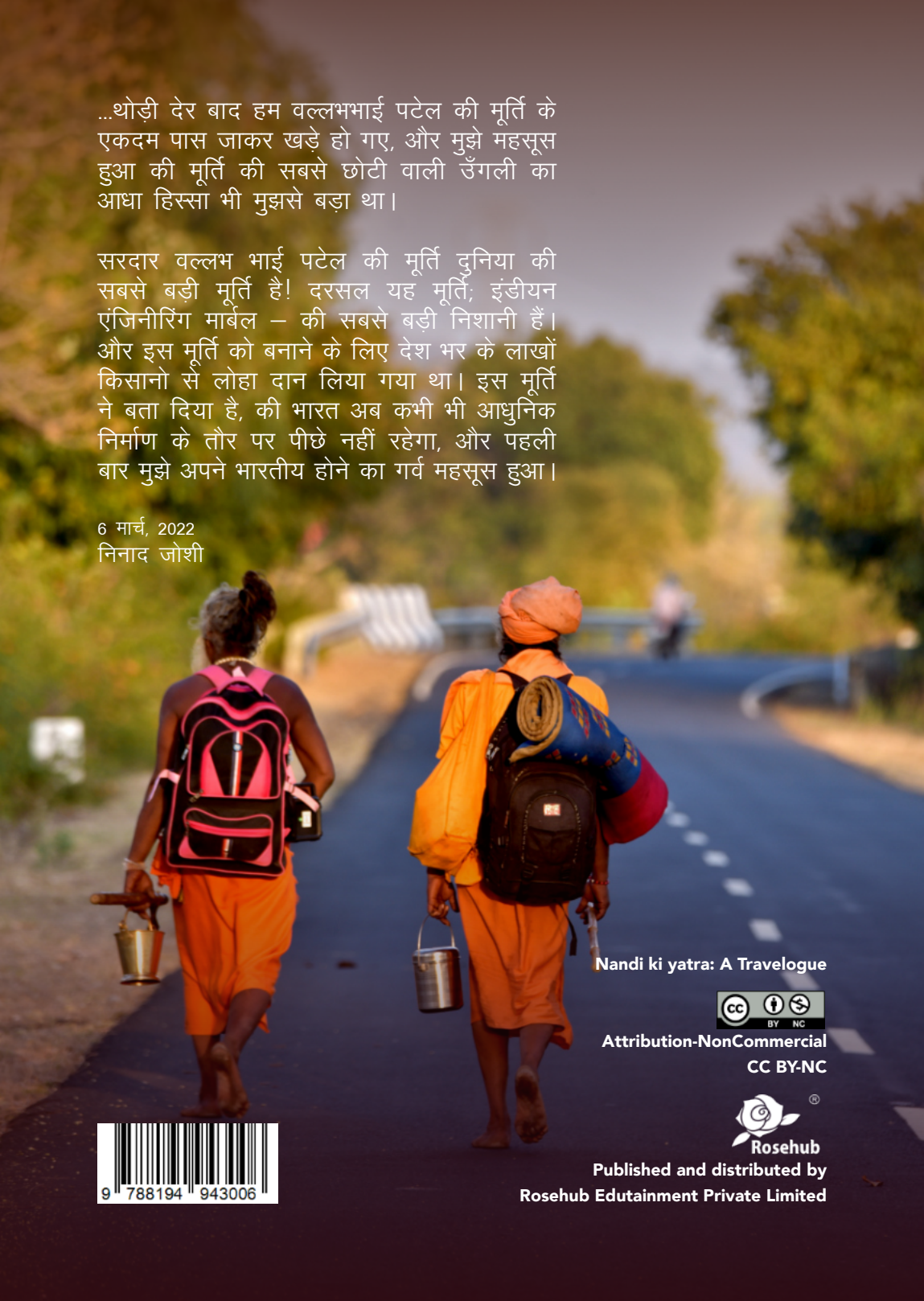

Nandi ki yatra: A Travelogue

Attribution-NonCommercial
CC BY-NC

Rosehub
Published and distributed by
Rosehub Edutainment Private Limited

9 788194 943006